गांधी जन्म-शताब्दी प्रकाशन

गाधीजी के जीवन के प्रेरणादायक प्रसग

•

सम्पादक

विष्णु प्रभाकर

•

१९६९

गांधी स्मारक निधि

सस्ता साहित्य मंडल

का सयुक्त प्रकाशन

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मन्त्री, सस्ता साहित्य मडल,
नई दिल्ली

पहली बार · १९६९
मूल्य
एक रुपया

मुद्रक
हिन्दी प्रिंटिग प्रेस,
क्वीस रोड, दिल्ली-६

राष्ट्रीय गांधी जन्म-शताब्दी समिति

अध्यक्ष : डॉ० जाकिर हुसैन

उपाध्यक्ष : श्री वी० वी० गिरि

अध्यक्ष कार्यकारिणी : श्रीमती इदिरा गाधी

मानद मत्री : श्री रगनाथ रामचन्द्र दिवाकर

श्री रगनाथ रामचद्र दिवाकर की अध्यक्षता मे समिति की प्रकाशन सलाहकार समिति के तत्त्वावधान मे 'गाधी स्मारक निधि' के द्वारा 'सस्ता साहित्य मडल' के सहयोग से यह पुस्तकमाला प्रकाशित कराई जा रही है।

१, राजघाट कालोनी,
नई दिल्ली

—**देवेन्द्रकुमार गुप्त**
सगठन मत्री
राष्ट्रीय गाधी जन्म शताब्दी
समिति

प्रकाशकीय

महात्मा गाधी के जीवन के लोकोपयोगी प्रसगो की इस पुस्तक-माला की तीन पुस्तके पाठको के हाथो मे पहुच चुकी हे। चौथी पहुच रही है। इन तथा आगे की अन्य पुस्तको मे गाधीजी के व्यक्तित्व एव कृतित्व पर प्रकाश डालनेवाले प्रसग दिये गए हैं।

इन पुस्तको की सामग्री अनेक पुस्तको मे से चुनकर ली गई हे। उन पुस्तको तथा उनके लेखको के नाम प्रत्येक पुस्तक के अन्त मे दे दिये गए है। इन प्रसगो की भाषा को अधिकाधिक परिमार्जित कर दिया गया है। यह कार्य श्री विष्णु प्रभाकर ने किया है। वह हिन्दी के जाने-माने कथा-कार तथा नाटककार हैं। उन्होने हिन्दी की अनेक विधाओ को समृद्ध किया है। इन पुस्तको की भाषा को अपनी कुशल लेखनी से उन्होने न केवल सरस बनाया है, अपितु उसे सुगठित भी कर दिया है। इसके लिए हम उनके आभारी है।

अत्यन्त व्यस्त होते हुए भी श्री दिवाकरजी ने इस पुस्तक-माला की भूमिका लिख देने की कृपा की, तदर्थ हम उनके अनुग्रहीत हे।

पुस्तक का मूल्य इतना कम रखने के लिए निधि द्वारा आशिक आर्थिक सहायता दी जा रही है।

हमे पूरा विश्वास है कि इन पुस्तको का सभी वर्गो तथा क्षेत्रो मे हार्दिक स्वागत होगा और इनका देश-व्यापी ही नही, विश्व-व्यापी प्रचार भी।

—मत्री

भूमिका

जो बात उपदेशो के बडे-बडे पोथे नहीं समझा सकते, वह उन उपदेशो मे से किसी एक को भी जीवन मे उतारने के समझ मे आ जाती है। इसलिए गाधीजी कहते थे कि मेरा जीवन ही मेरा सन्देश है। उनके जीवन का यह सन्देश उनके दैनन्दिन जीवन की घटनाओ मे प्रदर्शित और प्रकाशित होता है।

ससार के तिमिर का नाश करने के लिए मानव-इतिहास मे जो व्यक्ति प्रकाश-पुज की भाति आते है उनका सारा जीवन ही सत्य और ज्ञान से प्रकाशित रहता है। गाधीजी के जीवन मे यह बात साफ दिखाई देती है। इस पुस्तक-माला मे गाधीजी के जीवन के चुने हुए प्रसगो का सकलन करने का प्रयास किया गया है। उनका प्रकाश काल के साथ मन्द नही पडता। वे क्षण मे चिरन्तन के जीवन के किसी पहलू को प्रदर्शित करते है। उनकी प्रेरणा स्थानीय न होकर विश्वव्यापी है।

ये प्रसग गाधीजी के जीवन से सम्बन्धित प्राय सभी पुस्तको के अध्ययन के बाद तैयार किये गए है। हर प्रसग की प्रामाणिकता की पूरी तरह रक्षा की गई है। फिर भी वे अपने आपमे सम्पूर्ण और मौलिक है।

यह पुस्तक-माला अधिक-से-अधिक हाथो मे पहुचे तथा भारत की सभी भाषाओ मे ही नही, वरन् ससार की अन्य भाषाओ मे भी इसका अनुवाद हो, ऐसी अपेक्षा है। मैं आशा करता हू कि गाधी-जन्म-शताब्दी के अवसर पर प्रकाशित यह पुस्तक-माला अपनी प्रभा से अनगिनत लोगो के जीवन को प्रेरित और प्रकाशित करेगी।

रंगनाथ दिवाकर

विषय-सूची

त्याग
हृदय की वृत्ति है

त्याग हृदय की वृत्ति है

व्यक्तिगत-सत्याग्रह अभी आरम्भ नही हुआ था। वायसराय से बाते चल रही थी। गाधीजी हरिजन-निवास में ठहरे हुए थे। भारत के अनेक चोटी के नेता भी वही थे। देश का भाग्य सकट मे था।

उस समय हिन्दी के लेखक श्री रामनाथ 'सुमन' भी वही ठहरे हुए थे। उनकी पत्नी राजयक्ष्मा रोग से पीडित थी। तबतक इस रोग का अचूक इलाज नही निकला था। इसलिए सुमनजी बहुत चिन्तित थे। इसी चिन्ता के कारण वह गाधीजी से मिलने भी नही गये। लेकिन गाधीजी तो सबकुछ जानते थे। एक दिन जब वह वायसराय से मिलने के लिए चले तो सुमनजी बरामदे में बैठे अखबार पढ रहे थे। गाधीजी को उधर से ही होकर जाना होता था। कुछ दूर पैदल चलकर मुख्य सडक पर वह मोटर मे बैठते थे। सुमनजी ने उन्हे आते हुए देखा। उनका सामना न हो, यह सोचकर वह तुरन्त अन्दर के कमरे मे चले गये, लेकिन दो मिनट भी नही बीत पाई थी कि गांधीजी कमरे मे आकर खडे हो गये और अपनी अप्रतिम खिलखिलाहट के बीच बोले, "चोर पकडा गया!"

इसके बाद इतने दिनो तक न मिलने और पत्नी का समा-

चार न देने के लिए सुमनजी को खूब फटकारा। सुमनजी ने उत्तर दिया, "आप इतने महत्वपूर्ण कामो मे लगे है। अपनी कष्टकथा मे आपको उलझाकर आपका समय कैसे नष्ट करता!"

विगडकर गाधीजी ने कहा, "तुम ऐसा कहते हो!"

फिर वह पत्नी को धीरज बधाते रहे। जाते समय उन्होने सुमनजी को आज्ञा दी, "सव काम छोडकर केवल इनकी सेवा-शुश्रूषा करो।"

बाद मे उन्होने इसी सदर्भ मे सुमनजी को लिखा, "आन्दोलन मे भाग लेने की आसक्ति का त्याग ही तुम्हारे लिए सच्चा त्याग है। त्याग हृदय की वृत्ति है। तुम अपनेको पगु अनुभव करते हो। पगु भी सेवा कर सकता है। इस समय तुम्हारा स्वधर्म यही है।"

: २

इसमें अनुचित क्या है?

दक्षिण अफ्रीका से लौटने के कुछ दिन बाद ही गाधीजी शातिनिकेतन पहुच गये थे। उनकी मडली उस समय वही पर ठहरी हुई थी। काकासाहेव कालेलकर भी उन दिनो वही पर थे। उस दिन वहुत रात तक वे दोनो वाते करते रहे। सवेरे उठकर साथ-साथ प्रार्थना की। उसके बाद काकासाहेव आदि :। लोग मजदूरी के लिए चले गये।

वहा से लौटकर वे क्या देखते है कि उनके लिए अलग-अलग थालियो मे नाश्ता और फल आदि सबकुछ सवारकर तैयार रखे हुए है ।

काकासाहेब सोचने लगे—वे सब तो काम पर गये थे, फिर यह सब मेहनत किसने की ? मा का यह स्नेह किसने उनपर लुटाया ? उन्होने गाधीजी से पूछा, "यह सब किसने किया है ?"

उन्होने उत्तर दिया, "क्यो ? मैने किया है ।"

काकासाहेब सकोच के साथ बोले, "आपने क्यो किया ? आप यह सब करे और हम बैठे-बैठे खाय, यह मुझे उचित नही मालूम देता ।"

गाधीजी ने कहा, "क्यो, इसमे अनुचित क्या है ?"

काकासाहेब बोले, "आप जैसो की सेवा लेने की योग्यता हममें होनी चाहिए न !"

सहज भाव से गाधीजी बोले, "निश्चय ही तुम उसके योग्य हो । तुम सब तो काम पर गये थे । नाश्ता करने के बाद फिर काम पर जुट जाओगे । मुझे अवकाश-ही-अवकाश था, इसलिए मैने तुम लोगो का समय बचाया । एक घटा काम करके यह नाश्ता करने की योग्यता तुमने अपने-आप प्राप्त कर ली है ।"

चोरों से आप इतना डरते हैं!

ट्रावनकोर मदिर-प्रवेश घोषणा के समारोह का सभापतित्व करने के लिए गाधीजी त्रिवेन्द्रम गये थे। एस० के० जार्ज वही रहते थे और उन दिनो उनकी पत्नी अस्वस्थ थी। उनका घर उस गेस्ट हाउस के पास ही था, जहा गाधीजी ठहरे हुए थे। सध्या के समय भोजन के बाद गाधीजी ने अपनी लाठी उठाई और जार्ज की पत्नी से मिलने के लिए निकल पडे।

रात के ६ बजे थे। घर मे घासलेट का एक छोटा-सा चिराग जल रहा था। उसी समय जार्ज के कानो मे महादेवभाई की आवाज आई। झाककर देखते क्या है कि गाधीजी तालाबन्द फाटक के बाहर अपने दल-सहित खडे हुए है।

तुरन्त दौडकर जार्ज ने ताला खोला। मुस्कराते हुए गाधीजी ने अन्दर प्रवेश किया। कहा, "तो चोरो से आप इतना डरते है!"

घर के भीतर आने पर जार्ज ने गाधीजी से ड्राइगरूम मे बैठने की प्रार्थना की। गाधीजी ने तुरन्त उत्तर दिया, "मै आपकी पत्नी से मिलने आया हू, न कि आपसे।"

वह बेधडक उनकी पत्नी के कमरे मे चले गये और उनकी खटिया के पास बैठकर स्वास्थ्य-सबधी बाते करने लगे।

वस्तुतः सवेरे जार्ज स्वय गाधीजी से मिलने गये थे, लेकिन भेट नही हो सकी थी। महादेवभाई को अपनी पत्नी की बीमारी

की सूचना देकर ही वह लौट आये थे। उस समय रामचन्द्रन ने उनसे कहा था, "कोई बात नही, मोहम्मद ही पर्वत के पास पहुच जायगा।"

जार्ज ने उत्तर दिया था, "हम इस योग्य कहा कि प्रभु हमारे घर पधारे!"

लेकिन प्रभु तो पधार गये थे।

: ४ :

पिताजी, आज बड़ा अच्छा नाटक है

अपने पिता की चर्चा करते हुए गाधीजी ने स्वय कहा है, "मेरे पिता छोटे-से-छोटा काम भी नौकर-चाकरो से नही करवाते थे, बल्कि मुझसे ही करवाते थे। मेरे प्रति उनकी आसक्ति कुछ अलौकिक थी। ऐसा पिता बिरला ही होगा। मैने जिस दिन नाटक देखा, उस दिन मेरे पिता सिर पीटकर रोये थे।"

गांधीजी ने जिस घटना की ओर सकेत किया है वह इस प्रकार है उस दिन सदा की तरह वह अपने पिता के पैर दबा रहे थे। दबाते-दबाते मन मे विचार उठा कि आज छुट्टी मिल जाय तो वड़ा अच्छा हो। नाटक देखने को मिले।

साहस करके उन्होने पिताजी से कहा, "पिताजी ."

पिताजी क्यो सुनने लगे! जान गये कि आज लडके का चित्त कही-न-कही लगा हुआ है। गाधीजी ने दूसरी बार कहा, "पिताजी, आज बडा अच्छा नाटक है।"

पिताजी ने तब भी कोई जवाब नही दिया, लेकिन गाधीजी के मन मे तो मोह पैदा हो गया था। पिताजी के मौन से वह भग नही हुआ। तीसरी बार कहा, "आज बडा अच्छा नाटक है। देखने जाऊ?"

इस बार पिताजी ने कहा, "जाओ।"

स्पष्ट ही इसका अर्थ था कि मत जाओ, लेकिन गाधीजी के पास अर्थ समझने का अवकाश कहा था! वह तुरन्त नाटक देखने के लिए चले गये। रगमच का पहला पर्दा उठा कि तभी घर से आकर एक आदमी ने खबर दी, "पिताजी रो-रोकर सिर पीट रहे है।"

अब गाधीजी की समझ मे आया। वह तुरन्त घर पहुचे और पिताजी से क्षमा मागी। पिताजी कुछ भी नही बोले। एक भी कडवा शब्द नही कहा। बस, सिर पीटकर अपनी नापसन्दगी बता दी। उसके बाद उनके जीवन-काल मे गाधीजी ने कभी नाटक नही देखा।

: ५ :

समूह में रहने का अवसर अमूल्य लाभ मिलता है

स्वाधीनता से पूर्व मार्च, १९४७ मे गाधीजी बिहार मे घूम रहे थे। वहा भी साम्प्रदायिक आग लगी हुई थी। जब वह पटना मे ठहरे हुए थे, वहा से प्रतिदिन प्रार्थना करने के लिए गाव मे

जाते थे और वापस लौट आते थे। पाच-छ घटे इसीमें बीत जाते थे। उस दिन भी ऐसा ही हुआ। गाधीजी बहुत थक गये। फिर आख बद करके थोडी देर टहले। उसके बाद वह सोनेवाले थे, लेकिन तभी पता लगा कि उनकी फाइल में से कोई कागज इधर-उधर हो गया है। उसे ढूढने में काफी देर लग गई। वास्तव में एक भाई वह कागज ले गये थे। मनु को इस बात का पता नही था। गाधीजी ने उससे कहा, "यह कागज इस फाइल में से इधर-उधर चला गया, इसकी कोई बात नही। उन भाई ने लिया था, लेकिन मै इसे तुम्हारी ही भूल मानता हू। मै जितनी भूल तुम्हारी देखूगा उतनी और किसीकी नही। आफिस के काम मे, व्यक्तिगत काम मे, घर के काम मे, अथवा व्यावहारिक काम में, किसीकी भी भूल होगी, उसे मै तुम्हारी ही भूल मानूगा, क्योकि तुम्हे यह मानना चाहिए कि तुम नौआखाली की तरह यहां भी अकेली ही हो। वहा ऐसी भूल कभी नही होती थी, क्योकि वहा अकेले तुम्हीको सब काम सभालना होता था, परन्तु अकेले में जो परीक्षा होती है उससे अधिक कठोर परीक्षा होती है समूह में। इसलिए समूह में रहने से अक्सर अमूल्य लाभ मिलता है। जब समूह में रहते हुए भी तुम दृढ और जागृत रहोगी तो कुशल बन जाओगी।"

इस प्रकार मनु को उसके उत्तरदायित्व का ज्ञान कराने के बाद ही उस रात गाधीजी सोने के लिए गये।

मैं मन का गुलाम नहीं बनूंगा

दक्षिण अफ्रीका मे एक बार गाधीजी ने किसी कारणवश उपवास किया था। उनके एक जर्मन साथी कैलनबैक उस समय जोहानिसबर्ग में रहते थे। उन्हे यह सूचना चार दिन बाद मिली। उपवास चौदह दिन का था। वह व्याकुल हो उठे। उन्होने तुरन्त गाधीजी को तार दिया, "मै आ रहा हू।"

दूसरे दिन वह शाम की गाडी से चार बजे पहुचनेवाले थे। दो-ढाई बजे के लगभग बिस्तर पर लेटे-लेटे गाधीजी बोले, "जिसे मेरे साथ स्टेशन चलना हो, तैयार हो जाय। प्रेस या शाला मे जिसका काम है, वह न आये।"

इतना कहकर वह बिस्तर से उठे, लाठी ली, चप्पल पहनी और चल पडे स्टेशन की ओर। रावजीभाई पटेल भी उनके साथ थे। सब लोग स्टेशन पहुचे। गाडी आई और कैलनबैक नीचे उतरे। उन्होने गाधीजी को स्टेशन पर देखा तो चकित रह गये। बोले, "मै तो समझता था कि आप बिस्तर पर होगे।"

गाधीजी ने हँसते-हँसते कहा, "हा, था तो बिस्तर पर ही, मुझसे यह सहन नही हुआ कि तुम मुझे बिस्तर पर पडा समझकर वहां से यहा भागे चले आओ। मेरे लिए इतनी अधिक चिन्ता क्यो हो? इतना अधिक मोह किसलिए? मै तीन मील चलकर तुम्हारे सामने यह बताने के लिए आया हू कि मैं बिस्तर पर नही पडा रहा।"

कैलनबैक यह सुनकर बहुत खुश हुए और सब लोग बाते करते-करते आश्रम वापस आ गये। लेकिन गाधीजी के मन में तो यह प्रश्न दिन-भर उमडता रहा। सध्या की प्रार्थना के बाद सबको सम्बोधित करते हुए उन्होने कहा, "तुम लोग गीता के श्लोक कण्ठस्थ कर लो, तो इससे मै प्रसन्न नही होऊगा। इतिहास पढो या न पढो, गणित करो या न करो, संस्कृत पढो या न पढो, मुझे कोई चिन्ता नही, परन्तु यह आवश्यक है कि तुम सयम-व्रत धारण करो। मुझे यही चाहिए। मै मनुष्य का गुलाम बनना चाहूगा, पर अपने मन का नही। मन का गुलाम बनने से बढकर और कोई अधम पाप नही। इसलिए तुम समझ-बूझकर मन को सयम मे रखना सीखो। ऐसी स्थिति मे ही तुम मेरे पास रह सकोगे, नही तो मुझे किसीकी जरूरत नही। मै तुममे से किसीको भी सिखाने का अभिमान नही रखता। मेरे पास एक शिष्य है, जिसे सिखाना बडे-से-बडा काम है। उसे शिक्षा देकर ही मै तुम्हारा, हिन्दुस्तान का या मानव-जाति का भला कर सकूगा और वह शिष्य मै खुद ही हू। इसे मै अपना मन कहता हूं। इस प्रकार जो अपनेको अपना शिष्य बनायेगे, वे ही यहा रहने के लायक है।"

: ७ :

अंग्रेजी सीखने की विचारधारा के पीछे दोष है

सुप्रसिद्ध जैन विद्वान पण्डित सुखलाल अग्रेजी सीखने के लिए बहुत उत्सुक थे। किसी प्रसग मे उन्होने गाधीजी को लिख-कर पूछा कि वह किस तरह और किस स्थान पर यह भाषा सीखने की सुविधा पा सकेगे ?

यरवदा-जेल से गाधीजी का उत्तर आया, "तुम्हारी अग्रेजी सीखने की विचारधारा के पीछे दोष तो है, लेकिन अगर तुमने दृढ निश्चय ही कर लिया है तो अवश्य सीखो। इस काम के लिए शान्तिनिकेतन ठीक रहेगा।"

इस सबध मे कुछ वर्ष पूर्व भी पण्डितजी ने गाधीजी से विचार-विनिमय किया था। उसी सदर्भ मे इस उत्तर का महत्व है। उस समय गाधीजी ने स्पष्ट शब्दो मे कहा था, "अग्रेजी भाषा तो पृथ्वी जैसी विशाल है। अगर तुम जैसे लोग उसमे शक्ति खर्च न करे तो कुछ बिगड़ेगा नही। तुम जो-जो शास्त्र जानते हो, उन संस्कृत, प्राकृत और पाली के शास्त्रो के ठीक-ठीक अर्थ और तत्वो को प्रकाशित करना कोई सरल काम नही है। वह तो अनन्त शक्ति का आकाक्षी है। इसलिए उनके रहस्य-चिन्तन मे ही अपनी शक्ति क्यो नही लगाते ?"

दो क्षण रुककर वह फिर बोले थे, "देखो न, राजचन्द्रजी[1] की

---

१ इन्हे गाधीजी ने अपने तीन गुरुओ मे माना था।

स्मृति अपार थी। एक बार पढने या सुनने-भर से उन्हे अपरिचित अग्रेजी भापा की पुस्तक का कोई भी पृष्ठ याद रह जाता था, किन्तु वह उसके जजाल मे नही पडे, बल्कि अपना गहन चिन्तन और मनन जारी रखा। इस प्रकार वह और भी अच्छी और नई चीजे दे गये। तुम भी उनके रास्ते पर क्यो नही चलते ?"

: ८ :

नहीं, मुझे तो सोना चाहिए

सन् १९२७ में हरिद्वार मे कुम्भ के मेले के अवसर पर अखिल भारतीय खादी प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था। प० मदनमोहन मालवीय उसका उद्घाटन करनेवाले थे और गाधीजी भी उस अवसर पर उपस्थित रहनेवाले थे।

जब गाधीजी आये तो गहनो से लदी एक सेठानी उनके चरण स्पर्श करने के लिए तेजी से आगे आई। गाधीजी ने उसकी ओर देखा। मुस्कराकर बोले "कुछ दक्षिणा भी देगी या कोरा प्रणाम करेगी ?"

सेठानी ने अपने पति की ओर देखा। सेठ ने जेब से नोट निकाले, लेकिन गाधीजी बोले "नही-नही, मुझे तो सोना चाहिए।"

सेठानी ने अपना हार उतारकर गांधीजी को दे दिया। गाधीजी बोले, "इतने से क्या होगा ?"

सेठानी ने एक-एक करके सारे गहने उतार दिये, बोली, "बस, महात्माजी, अब तो सन्तुष्ट हो ?"

गाधीजी जोर से हॅसे और वोले, "अभी कहा ?"

सेठ ने कहा, "अब तो मेरे पास कुछ भी नही है।"

सेठानी के पैरो के बिछुओ की ओर इशारा करते हुए गाधीजी बोले, "और ये ?"

सेठानी ने उन्हे भी उतार दिया, परन्तु गाधीजी अभी भी सतुष्ट नही हुए थे। बोले, "वादा करो कि अब गहने कभी नही पहनोगी।"

सेठानी ने वादा किया।

: ९ :

हिन्दुस्तान जाकर हिमालय देखना

दक्षिण अफीका की बात है। श्री जमनादास जेल से छूटकर गाधीजी के पास पहुच गये थे। अकस्मात गाधीजी ने सूचना दी कि जमनादास और मणिलाल दोनो को शनिवार को दोपहर की ट्रेन से केपटाउन से जाना है। उस दिन बुधवार था। शनिवार को सवेरे ११ बजे स्टीमर से दीनबन्धु एड्रयूज को इग्लैड के लिए रवाना होना था। गाधीजी की वात सुनकर मणिलाल-भाई ने उनसे कहा, "यदि हम लोग सोमवार को यहा से जाय तो कैसा रहे ? रविवार के दिन डा० गुल के साथ हमे यहा का प्रसिद्ध शिखर 'टेवुल माउन्टेन' देखना है।

लेकिन गाधीजी ने यह प्रस्ताव स्वीकार नही किया। उन्होने आग्रहपूर्वक कहा, "टेबुल माउन्टेन में देखने की बात ही क्या है। देखना हो तो हिन्दुस्तान जाकर हिमालय देखना। हिमालय मे तो कई हजार 'टेबुल माउन्टेन' समा जायगे।"

डा० गुल और उनकी माताजी ने भी सिफारिश की। लेकिन गाधीजी नही माने। उनको सन्देह था कि ये लोग मौज-शौक मे फस गये है। डा० गुल का कमरा आलीशान था। अग्रेजो जैसा उनका ठाठ-बाट था। उन्हीके साथ भोजन की मेज पर बैठकर ये लोग भोजन करते थे। यही सब देखकर गांधीजी ने दोनों को अपने पास नही टिकने दिया। एक को रहने देते तो वह पक्षपात माना जाता।

: १० :

मेरी चले तो . . .

बिहार प्रवास मे घूमते-घूमते एक दिन गाधीजी मसूढी पहुचे। स्टेशन पर बेशुमार भीड थी। बडी मुश्किल से वह मोटर तक पहुच सके। वह एक पाठशाला में ठहरे। सध्या को छः बजे प्रार्थना हुई। पटना से भी अधिक लोग यहा आये थे। वाता-वरण बडा सात्त्विक था। पटना में, जनता के शिक्षित होने पर भी, रामधुन शुरू करने पर ताल देने की तालीम देनी पडती थी, लेकिन यहा देहातियो ने तालबद्ध रामधुन एक ही आवाज मे अपना ली। गाधीजी बहुत प्रसन्न हुए। उनको बधाई देते

बोले, "आपने ताल बहुत अच्छी दी है। सभी भाई-बहनो ने रामधुन मे भाग लिया, यह अच्छा है, परन्तु मेरी यह यात्रा मौज उडाने और आनन्द करने के लिए नही है। दुःख से भरी है, इसीलिए प्रायश्चित्त-स्वरूप है। चारो ओर बर्बादी-ही-बर्बादी दिखाई देती है। मुझे ऐसा लगता है, जैसे यह अपराध मैंने ही किया है, क्योकि मेरे भाइयो ने किया है। ऐसे समय आप जय-घोष करे या पुष्पहार पहनाए, यह अच्छा नही लगता, उलटा दु ख होता है। अच्छा तो यह हो कि जिन लोगो ने अपराध किया है, वे मेरे पास आकर उसे स्वीकार कर ले, उसका प्रायश्चित्त करे, तो सरकार उन्हे परेशान न करे, ऐसी कोशिश मैं करूंगा। मनुष्य से भूल हो ही जाती है, परन्तु यदि वह अपनी भूल स्वीकार करके दुबारा वैसी भूल न करे और सारा जीवन बदल ले तो उसे जेल भेजने या पुलिस के हवाले करने की आवश्यकता ही नही रहती। ऐसा आदर्श अहिसक राज्य कायम हो तो पुलिस पर जो इतना खर्च देश को करना पडता है, वह न करना पडे। मेरी चले तो मै पुलिसवालो के हाथो में बन्दूक की बजाय फावडा, कुदाली और हल इत्यादि दे दू, जिससे ये गावो को सुधारे और खेती करे।"

प्रार्थना के बाद गाधीजी घर आये। बहुत थक गये थे। लेट गये। तभी एक भाई ने आकर कहा, "मुझे गाधीजी से मिलना है। मैं अपना अपराध स्वीकार करना चाहता हू।"

और जब गाधीजी ने उसे अपने पास बुलाया तो वह अत्यन्त गद्गद् हो उठे। गांधीजी ने बडे प्रेम से उन्हे शान्त किया। पानी पिलाया। जो काम सरकार की पुलिस और सी० आई० डी०

न कर सकी, उसे गाधीजी के प्रेम ने क्षणभर मे कर लिया, लेकिन गाधीजी को जरा भी अचरज नही हुआ। उन भाई के जाने के बाद वह सहज भाव से बोले, "मै दक्षिण अफ्रीका से यह काम करता आया हू। मेरे जीवन मे ऐसा होता ही रहा है। ऐसे काम ईश्वर की सहायता के बिना नही होते। मै तो रामजी का नचाया नाचता हू।"

: ११ :

मैं नहीं चाहता कि मजदूरों पर दबाव डाला जाय

अहमदाबाद मे उन दिनो मिल-मालिको और मजदूरों मे झगडा चल रहा था। मिल-मालिको की ओर प्रमुख थे श्री अम्बालाल साराभाई। मजदूरो की ओर से गाधीजी आदोलन का सचालन कर रहे थे। झगडा होने पर भी दोनो पक्षो मे पूरा सद्भाव बना हुआ था। एक दिन अम्बालाल साराभाई का एक निजी और गुप्त पत्र गाधीजी के पास आया। पत्र बहुत लम्बा था। गाधीजी ने उसे पढा और फाड़ डाला। फिर उसका उत्तर लिखने लगे। उनके निजी सचिव महादेवभाई उनके पीछे खडे हुए थे। उन्होने उस उत्तर को पढ लिया। जब गाधीजी पत्र समाप्त कर चुके तो महादेवभाई ने कहा, "लाइये, इसकी नकल कर दू।'

गाधीजी ने उत्तर दिया, 'इसकी नकल नही की जा सकती।

ऐसी चीजे प्रकाशित नही हो सकती। डायरी मे भी नही लिखी जा सकती।"

महादेवभाई बोले, "जितना मुझे याद हो गया है, उतना तो लिखूगा ही।"

गाधीजी ने कहा, "भले ही लिखो।"

मिल-मालिको की तालाबन्दी का आखिरी दिन था। श्री अम्बालाल को आशा थी कि बहुत-से बुनकर काम पर आ जायगे, परन्तु आया कोई नही। सम्भवतः इसी बात की चर्चा करते हुए श्री अम्बालाल ने वह पत्र लिखा था कि मजदूरो ने आनेवाले मजदूरो पर दबाव डाला है, इसीलिए वे नही आये। गाधीजी को उन्हे ऐसा करने से रोकना चाहिए।

गाधीजी ने इसका जो उत्तर दिया, उसका भाव इस प्रकार था: "आपका पत्र मिला और पढकर मैने उसे फाड़ डाला। मैने यह चाहा ही नही कि मजदूरो पर दबाव डाला जाय। मजदूरो पर दबाव डालने के सम्बन्ध मे आप अधिक निश्चित बाते लिखेगे तो मै जरूर बन्दोबस्त करूगा। मजदूर काम पर जाय या न जाय, इसकी मुझे परवा नही। किसी भी आदमी को मिल मे जाते हुए जबरन न रोकने की हिदायत मै देता रहा हू। मैं यह चाहता ही नही कि मजदूर इच्छा के विरुद्ध मिल मे ही न जायं। कोई मजदूर मिल मे जाने की इच्छा प्रकट करे तो उसे मै खुद मिल मे छोड़ आने को तैयार हू।"

: १२ :

मैं उन्हें कैसे निराश कर सकता हूं ?

जलियावाला हत्याकांड के बाद पजाब का दौरा करते हुए गाधीजी जालधर पहुचे। वह जनता के आराध्यदेव थे। उनके दर्शनो के लिए असख्य व्यक्ति इकट्ठे हुए थे। उस अनियत्रित भीड ने उन्हे कुचल भी डाला। उनके पैर मे बडा तेज दर्द होने लगा और शाम होते-होते उन्हे तेज बुखार चढ आया। राजकुमारी अमृतकौर के एक भाई डाक्टर थे। सयोग से वही उस समय वहा सिविल सर्जन थे। उन्होने प्रार्थना की, "चौबीस घटे के लिए आप अपना सफर रोक दीजिए।"

गाधीजी ने उत्तर दिया, "मै उन बहुत सारे लोगो को, जो जगह-जगह मेरी राह देखते होगे, कैसे निराश कर सकता हू ? मै आपको विश्वास दिलाता हू कि सुबह दस बजे तक, जो मेरी ट्रेन के छूटने का समय है, मै ज्वर से मुक्त हो जाऊगा।"

राजकुमारी अमृतकौर ने गर्म जल से भरी हुई एक बोतल उनके पास भेजी कि वह सफर मे उसे अपने साथ रखे।

लेकिन सुबह होते-न-होते वह बोतल लौटकर राजकुमारी के पास ही आ गई। साथ मे महादेवभाई के हाथ का लिखा धन्यवाद का पत्र था। लिखा था, "आपको जानकर खुशी होगी कि जालधर छोड़ने के पूर्व ही गाधीजी का बुखार रफूचक्कर हो गया। इसलिए बोतल की अब कोई आवश्यकता ही नही रही।"

अपनी गलती मानना ही सच्ची विजय है

राजकोट रियासत मे होनेवाले सुधारों को लेकर वहा के ठाकुरसाहब और गाधीजी मे मतभेद पैदा हो गया था। गाधीजी ने इस प्रश्न को लेकर अनशन भी किया। अन्त मे यह समस्या निर्णय के लिए भारत के मुख्य न्यायाधीश सर मॉरिस ग्वायर को सौप दी गई। उन्होने जो निर्णय दिया वह सर्वथा गाधीजी के अनुकूल था।

परन्तु कुछ ही दिन बाद गाधीजी को ऐसा लगा कि इस प्रश्न को मुख्य न्यायाधीश को सौंपने मे उन्होने गलती की है। यह अहिसा का मार्ग नही था। उन्होने तुरन्त एक पत्रक निकालकर इस निर्णय को ताक मे रख देने का निश्चय किया।

अन्य बातो के अतिरिक्त इस पत्रक में उन्होने लिखा, "मेरा यह कार्य अहिसातत्व के सर्वथा विरुद्ध था। उस निर्णय पर निर्भर रहकर अपने मन का ओछापन व्यक्त करने के बाद मै यह आशा क्यो करू कि दरबार वीरावाला ही उदारता दिखावे ? विश्वास से ही विश्वास पैदा होता है। मुझमे ही विश्वास का अभाव था, पर आखिर मेरा खोया हुआ धैर्य मुझमे लौट आया है। जनता के सामने अपनी भूले स्वीकार कर लेने और उसपर पश्चात्ताप करने के कारण अहिसा पर मेरी श्रद्धा एक तरह से तेजस्वी हो गई है।'

लेकिन गाधीजी का यह कार्य उनके साथियो को पसन्द नही आया। उनकी बडी बहन, जो इस सत्याग्रह में बडी सक्रिय थी, बड़ी दु खी हुई।

कस्तूरबा ने गाधीजी से अनुरोध किया कि वह बहन को समझावे।

गाधीजी हँसकर वोले, "तुम ही क्यो नही समझा देती ?"

कस्तूरबा ने कहा, "मै स्वय ही यह सब कहा समझती हू ?"

गाधीजी ने कहा, "तो तुम समझ लो। दक्षिण अफ्रीका में जब तुम बहुत वीमार पड गई थी और डाक्टरो ने कहा था कि यदि तुम्हे चिकन सूप (मुर्गी का शोरवा) नही दिया गया, तो मर जाओगी। तब तुमने सूप लेने के बजाय मरना पसन्द किया था। तुम्हे भगवान पर अत्यन्त निष्ठा थी, इसीलिए तो तुमने मास न खाने की अपना प्रतिज्ञा भग करके जान बचाने की कोशिश नही की। मै भी अपना अनशन तबतक चालू रख सकता था जबतक वे लोग इस वात को कबूल करते कि प्रजा को दिये हुए वचन का पालन करने के लिए वे तैयार है। पर मेरा मन चचल हो उठा। मृत्यु के भय से अंग्रेज सरकार की मदद लेने का मोह मेरे मन मे पैदा हो गया। यह निर्णय उसी पाप का फल है। मुझे इसका त्याग करना जरूरी है।"

कस्तूरवा ने ठाकुरसाहब और दरवार वीरावाला ने जो अडचने पैदा कर दी थी उनकी चर्चा की, लेकिन गाधीजी वोले, "मेरी ही भूल का यह सारा परिणाम है। मैने उतावलापन दिखाया, इसलिए भगवान् ने मुझे दण्ड दिया और सच तो यह

है कि यह मेरी हार नही है। अपनी भूल स्वीकार करने मे हार नही होती। यह वात तुम वहन को समझा दो। अपनी गलती मानना ही सच्ची विजय है।"

: १४ .

हम दोनों ईसामसीह की राह पर चलेंगे

एक विदेशी महिला गाधीजी से मिलने के लिए आई। उनके सामने आने पर वह कुछ काप रही थी। वह कपन प्रीति और आह्लाद का कपन था। शायद कुछ भय भी था। गाधीजी ने कहा, "आओ-आओ, इतनी गुलाबी क्यो हुई जा रही हो? सब ठीक है। खत मिला था ?"

महिला इतनी विह्वल-विभोर थी कि सहसा उत्तर न दे पाई। अत्यन्त परिश्रम करने पर इतना ही कह सकी, "पत्र तो नही मिला है।"

चकित-भाव से गाधीजी वोले, "लेकिन वह तो प्रेम-पत्र था। यह न समझना कि मै बुड्ढा हू।"

सुनकर महिला आरक्त हो आई। फुसफुसाकर कुछ बोली, शायद गाधीजी ही उस भाषा को समझ पाये। वोले, "सच, वह मेरे प्रेम की पत्री थी। लम्वी, कई सफे की। अच्छा, अब हिन्दुस्तान आ ही गई हो यहा सेवा करो।"

महिला ने कहा, "मै यहा की भाषा नही जानती।"

गाधीजी बोले, "यह तो अच्छा है। मुह आप ही बद रहेगा। किसीने तुमसे बात की और तुमने दो अगुली मुह के आगे रख ली। वह समझेगा गूगी है।"

यह कहते-कहते वह खिलखिलाकर हँस पडे। महिला भी गद्गद थी, लेकिन दूसरे ही क्षण गाधीजी सहसा गम्भीर हो उठे और इजील मे से कुछ उद्धृत करते हुए बोले, "हम अन्तिम होगे...वहां पहले पिछले हो जायगे और पिछले पहले ." यह वाक्य तुम्हारी इजील का ही है न ? सब तो नही, पर 'गिरि-प्रवचन' मैने पढा है। अच्छा, अब भारत मे रहोगी। यह तुम्हारा देश होगा। हम दरिद्र है, पर दरिद्र मे नारायण बसते है।"

आत्मविभोर हो महिला उन्हे देखे जा रही थी। पर न तो पूरी तरह देख पाती थी और न पूरी तरह बोल पाती थी। गाधी-जी कहते रहे, "हम दोनो ईसामसीह की राह पर चलेगे, लेकिन अब तुम उस कोने मे जा बैठो। चुपचाप बैठी रहो। बाकी कल।"

कहकर वह अपने कागजो मे डूब गये और महिला स्तब्ध, उठी और बताये हुए कोने मे चुपचाप जा बैठी।

नहीं, इसे तो मैं इसके मालिक के पास भेजूंगा

गाधीजी चम्पारन से लौट रहे थे। वडी तेज गर्मी थी। बहुत ही साधारण स्थिति का एक और आदमी उसी डिब्बे मे सफर कर रहा था। वाद मे पता लगा कि वह पुलिस का आदमी था। लेकिन उसने पटना स्टेशन पर खूव पखा झला। रात का समय था। गाधीजी को नीद आ गई। उस समय उनके पैर उस आदमी की दरी पर थे और उसे वही उतरना था। यदि वह अपनी दरी उठाता तो गाधीजी के जग जाने का भय था। बस, वह दरी छोडकर चला गया।

गाधीजी जब जागे तो उन्हे इस बात का पता लगा। वह बडे चितित हुए। बोले, "चुपचाप काम करनेवाले ऐसे व्यक्ति इस स्थान पर अभी है।"

महादेवभाई भी इस घटना से बडे प्रभावित हुए। उन्हे लगा, जैसे उन्होने भी अभी तक सेवा का ऐसा मूक कार्य नही किया है।

एक मारवाडी बैठा-बैठा यह सब देख-सुन रहा था। जब गाधीजी मुगलसराय स्टेशन पर उतरने लगे तो वह बोला, "यह दरी मुझे दे दीजिये न ? आप अब इसका क्या करेगे ?"

गाधीजी ने कहा, "नही, इसे तो मै इसके मालिक के पास भेजूगा।"

जब तार तुमने खोला था तो...

गाधीजी उन दिनो लाहौर मे थे कि सरदार पटेल के छूटने का तार आया। वह तार चन्द्रशंकर शुक्ल ने लिया। उसे पढकर उन्होने गाधीजी तथा अन्य सभी साथियो को यह सूचना दे दी।

ठक्करबापा उस समय वहा नही थे। इसलिए शुक्ल ने इस बात की सूचना उनके सेक्रेटरी को दे दी। सभवत किसी कारण-वश वह ठक्करबापा से इस सबध मे कुछ नही कह सके।

दोपहर को ठक्करबापा गाधीजी से मिलने आये तब उन्हे इस बात की सूचना मिली। गाधीजी ने तुरन्त शुक्ल से पूछा, "तार किसने खोला था ?"

शुक्ल ने जवाब दिया, "जी, मैने खोला था, लेकिन उस समय ठक्करबापा यहा नही थे। इसलिए उनके सेक्रेटरी से मैने कह दिया था।"

गाधीजी बोले, "यह कैसे हो सकता है ? जब तार तुमने खोला था, तो सबसे पहले तुम्हे ही सबको सूचना देनी चाहिए थी। मेरी दृष्टि मे यह बात सूक्ष्म शिष्टाचार की कमी जाहिर करती है।"

मैं अपनी फिक्र आप कर लूंगा

नमक-सत्याग्रह का आन्दोलन समाप्त हो चुका था। गाधीजी वायसराय लार्ड इर्विन से बातचीत कर रहे थे। वह प्रायः प्रतिदिन उनसे मिलने जाया करते थे और घंटो बातचीत करने के बाद लौटकर तुरंत कार्यसमिति को उसका विवरण देते थे। एक दिन ऐसा हुआ कि वह कोई बात स्वीकार कर आये थे। जब उन्होने उस स्वीकृति की सूचना कार्यसमिति को दी तो कुछ सदस्य चिन्तित हो उठे। किसीने कहा, "इस बात से तो आपकी बदनामी होगी।"

बिना किसी झिझक के गाधीजी बोले, "आप लोग मेरी बदनामी और नेकनामी की फिक्र न कीजिये। मैं अपनी फिक्र आप कर लूगा। आप लोग अपनी फिक्र कीजिये। आप यदि इस बात को स्वीकार नही करते तो मै अभी वायसराय के पास जाऊगा और उनसे कह दूगा कि यह शर्त हमे मजूर नही है। मै उसे वापस लेता हू।"

लेकिन ऐसा करने की शक्ति किसीमे नही थी। सब सदस्य मौन हो गये।

क्या तुम भी विश्वासघात करोगे ?

उन दिनो गांधीजी पर्णकुटी मे उपवास कर रहे थे। उनकी देखरेख का विशेष भार श्री बृजकृष्ण चादीवाला पर था। वही उनका कमोड साफ करते थे। सहसा एक दिन उनसे गाधीजी ने पूछा, "आज कमोड किसने साफ किया है?"

बृजकृष्णजी ने उत्तर दिया, "मै किसी और काम मे लगा हुआ था। मेरी गैरहाजिरी मे भगी आया और साफ कर गया।"

गाधीजी बोले, "इस बात का पूरा ध्यान रखना चाहिए कि नौकरो से कोई काम न लिया जाय।"

इसी प्रकार उनके नीचे जो गद्दा बिछता था उसे दूसरे दिन धूप मे डाल दिया जाता था। उनके पास खादी का यही एक गद्दा था। धूप मे डाल देने पर दूसरे गद्दे की जरूरत होती थी, परन्तु पर्णकुटी मे वैसा कोई दूसरा गद्दा नही था। इसलिए मिल के कपडे का गद्दा बिछाकर उसपर खादी की चादर डाल दी गई।

पर गाधीजी की दृष्टि से यह छिपा न रह सका। उन्होने उस गद्दे को देख लिया। तुरन्त पूछा, "गद्दा खादी का क्यो नही है?"

बृजकृष्णजी ने सफाई देने का प्रयत्न किया, परन्तु के सामने उनकी एक न चली। वह बोले, "भरोसा सबकुछ तुमपर छोड दिया है, तो क्या तुम मेरे साथ विश्वासघात करोगे?"

क्या गुमराह सन्त ज्यादा खतरनाक नहीं होता ?

भारत-व्यापी सत्याग्रह के प्रथम चरण मे जब देश के कई स्थानो पर दगे भडक उठे तब बहुत-से लोगो को यह विश्वास हो गया कि सरकार अब शीघ्र ही गाधीजी को गिरफ्तार कर लेगी। अहमदाबाद मे सेना की असाधारण गतिविधि के कारण यह विश्वास और भी दृढ होता जा रहा था।

इसी समय गाधीजी बम्बई से अहमदाबाद के लिए रवाना हुए। उन्होने देखा कि महादेव देसाई आदि सभी व्यक्ति कुछ घबराये हुए है। उन्होने कहा, "तुम सब आज घबरा क्यो रहे हो।"

महादेवभाई ने उत्तर दिया, "क्या घबराने का कारण आपको प्रतीत नही होता ?"

गाधीजी ने कहा, "नही, यह सब अकारण है।"

महादेवभाई बोले, "यह तैयारी क्या सूचित करती है ? क्या आपको ऐसा नही लगता कि सरकार ने आपको जरा अपना बल सगठित करने के लिए ही छोड रखा है ? यह सब तैयारी अब आपको पकडने की ही दिखाई देती है।"

गाधीजी हँस पड़े और बोले, "अरे, क्या बात करते हो ! मुझे क्या पकड़ेगे ? उनकी ताकत नही। यह सच है कि औरो को पकड़ेगे, परन्तु मुझे नही पकड सकते। हा, मुझे ये लोग अलग

जरूर कर देना चाहते है।"

महादेवभाई ने कहा, "बापू, आप भले ही ऐसा कहे, परन्तु मेरा ख्याल है, अब उनमें ऐसा करने की हिम्मत हो जायगी। इनपर आ बने तो गोली भी चला देगे।"

गाधीजी ने कहा, "अरे, क्या बात करते हो ? इनका ऐसा साहस कैसे हो सकता है ? यह तो बड़ी करुण घटना हो जायगी।"

महादेवभाई बोले, "सरकार को प्रैट और सर विलियम विन्सेन्ट जैसे राक्षस मिले है। वे तो सबपर गोली चला सकते है।"

गाधीजी ने कहा, "तुम्हारी बात सच है। इन्हे शर्म नही है, परन्तु यह बात नही हो सकती। यह उनकी परम्परा के विरुद्ध है। वे उस हद तक नही जायगे। देखो न, सावरकर जैसे पर भी गोली नही चलाई। अजीतसिह जैसे पर भी नही चलाई, तो फिर मुझपर क्या चलायेगे!"

महादेवभाई ने कहा, "बापू, रेजीनल्ड क्रेडॉक ने आपके लिए क्या लिखा है सो आपको मालूम है ? उसने लिखा है, 'एक गुमराह सन्त सौ आन्दोलनकारियो से अधिक भयकर है।' वह आपको ऐसा दुश्मन मानता है, तो आपके साथ कुछ भी कर सकता है।"

गाधीजी बोले, "वह जो कहता है, उसमे गलत क्या है ? क्या गुमराह सन्त ज्यादा खतरनाक नही होता ? यह दूसरी बात है कि मै गुमराह नही हू। वैसे यदि गोली चला दे तो बडा मजा आ जाय, परन्तु चला नही सकते। मुझ पर तो हर्गिज न ही।"

महादेवभाई ने कहा, "आपने गवर्नर को उकसाने मे कसर नही रखी। उसे सीधी चुनौती दे आये है कि तुम से जो हो, सो कर लेना। आपने जो कुछ कहा होगा, उसका एक-एक अक्षर विकृत होकर शिमला पहुचेगा। दक्षिण अफ्रीका मे आप हजारो की सख्या मे थे। यहा हम मुट्ठीभर है।"

गाधीजी बोले, "दक्षिण अफ्रीका मे तो सच्चे सत्याग्रही उगली पर गिनने लायक ही थे। यहा बहुत अधिक है। जो हो, मैं देख रहा हू कि देश का सितारा बडा बुलन्द है। ऐसा ऊचा पहुचेगा कि पूछो नही। मुझपर गोली चला दे तो बलवा ही हो जाय, क्राति ही मच जाय और ऐसा होने पर जो रक्तपात हो, उसके लिए मैं रत्तीभर भी जिम्मेदार नही समझा जाऊगा।"

महादेवभाई ने कहा, "पूछना तो जरा विचित्र है, पर अगर आपको फासी लगा दे और तब आपके अनुयायियो को गुस्सा आ जाय और वे खून बहाये तो क्या ऐसा करना आपकी आत्मा को दु ख पहुचाना होगा ?"

गाधीजी बोले, "बेशक ! तब तो यही कहा जायगा कि ये लोग सत्याग्रह का एक अक्षर भी नही समझे। सत्याग्रह अपवित्र हो जायगा। उसे अपार हानि पहुचेगी। तुम केवल इतना कर सकते हो कि ऐसे जबरदस्त सत्याग्रही कदम उठाते रहो कि तुम्हे भी फासी लगा दे।"

हमारे रीति-रिवाज रद्दी हैं

बिहार-प्रवास मे गाधीजी साम्प्रदायिक दगे को शान्त करते घर-घर घूम रहे थे, लेकिन इसी कारण उनके दूसरे कार्यक्रमो मे कोई व्यवधान नही पडता था। मनु उनके साथ थी, वह उनकी देखभाल करती थी तो उनसे पढती भी थी। प्रतिक्षण वह उसे जीवन के जीने की सीख देते रहते थे।

और वह स्वय भी तो पढते थे। प्रार्थना नियमित चलती थी। लोग मिलने आते थे। उस दिन लगभग तीन बजे डा० सैयद महमूद साहब के लडके महबूबभाई अपनी नई दुलहन के साथ उनका आशीर्वाद लेने के लिए आये। बहू ने गाधीजी के पैर छुये और सौ रुपये उनके हाथ मे रखे। मनु पास ही खडी थी। विनोद करती हुई बोली, "बापूजी, रिवाज तो ऐसा है कि विवाह करने पर जब नई बहू आती है तो वह सबको प्रणाम करती है और सब लोग उसे भेट देते है। आपको भी भाभी को देना चाहिए था, लेकिन यहा तो सब उलटा हो रहा है। यह बेचारी आपको देती है और आपको ये सौ रुपये भी कम लगते है।"

गाधीजी बोले, "हमारे रीति-रिवाज रद्दी है। असल में लडके को अबतक मां-बाप ने ही तो पाल-पोसकर बड़ा किया है, पढाया है, उसकी शादी की है, अब तो उसीको मा-बाप को देना चाहिए।"

सारा कमरा मुक्त हँसी से गूज उठा।

समय की पाबन्दी करनी चाहिए

दार्जिलिग मे देशबन्धु चित्तरजनदास बीमार थे। गाधीजी उन्हे देखने के लिए वही गये। उनके पास कई दिन रहे। उसके बाद पहाड पर से उतरकर उनका दौरा शुरू हो गया। उन्हें नवाबगज पहुचना था और इसके लिए सबसे पहले जलपाईगुडी से दार्जिलिग-कलकत्ता मेल पकडकर पोडाडीह जाना था, फिर वहा से गोआलेन्दो जानेवाली ढाका मेल पकडनी थी। उसके बाद नवाबगज तक अगनबोट से यात्रा करनी थी।

लेकिन रेल के रास्ते पर पहाड का एक हिस्सा टूटकर गिर गया था। इस कारण दार्जिलिग-कलकत्ता मेल डेढ घटा देर से पहुचनेवाली थी। अब पोडाडीह में ढाका-मेल पकड पाने की कोई सम्भावना नही थी। इस सबका मतलब था नवाबगज का कार्यक्रम चूक जाना।

लेकिन ऐसा कैसे हो सकता था! गाधीजी वादा कर चुके थे और वादा तोडना उनके स्वभाव के विरुद्ध था। कुछ भी हो, वहा समय पर पहुचना ही होगा।

श्री सतीशचन्द्र दास गुप्ता ने कहा, "अब तो स्पेशल ट्रेन का प्रबन्ध हो तभी नवाबगज ठीक समय पर पहुचा जा सकता है। इसके लिए ११४० रुपये देने पडेगे।"

गाधीजी ने तुरन्त उत्तर दिया, "तुम स्पेशल का इन्तजाम करो। जितनी सख्ती से मै वायसराय को दिये हुए समय की

पाबन्दी रखता हूं उतनी ही सख्ती से मुझे जनता को दिये गए समय की पाबन्दी रखनी चाहिए। मुझे समय पर नवाबगंज पहुंचना ही चाहिए।"

और गांधीजी ठीक समय पर नवाबगंज पहुंचे।

: २२ :

वे स्वयं ही तुम्हें बुलायेंगे

'भारत छोड़ो'-आन्दोलन से कुछ दिन पूर्व महात्माजी ने अचानक श्रीप्रकाश को बुलाने का आदेश दिया। जवाहरलाल नेहरू उस समय वहीं थे। जब श्रीप्रकाश वर्धा पहुंचे तो नेहरूजी ने उनसे कहा, "महात्माजी तुम्हें जोधपुर भेजना चाहते हैं।"

श्रीप्रकाश को बड़ा आश्चर्य हुआ, लेकिन वह जैसे ही महात्माजी के पास गये तो उन्होंने कहा, "तुम जोधपुर चले जाओ। वहां शासन और राजनैतिक कार्यकर्ताओं में बड़ा संघर्ष मचा हुआ है। जयनारायण व्यास बड़ी उच्चकोटि के कार्यकर्ता हैं। वह इस समय जेल में पड़े हैं। तुम वहां की राजनैतिक स्थिति का अध्ययन करके मुझे विवरण दो।"

श्रीप्रकाश बड़े असमंजस में पड़ गये। देशी राज्यों की राजनीति के बारे में वह कुछ भी नहीं जानते थे लेकिन इससे पहले कि वह 'हां' या 'ना' कहें, गांधीजी ने जोधपुर की मिसल निकालकर उन्हें दी, वहां की स्थिति समझाई और फौरन ही उन्हें चले जाने का आदेश देते हुए कहा, "मैं तार दे रहा हूं। तुमको वहां

पर वे सब लोग मिलेगे और सारी स्थिति बतला देंगे।"

आखिर श्रीप्रकाश मारवाड पहुचे। वह स्थान जोधपुर रियासत की सीमा से बाहर था और वही से आन्दोलन का सचालन हो रहा था। वहा के कार्यकर्ता उन्हे स्टेशन पर मिले और उन्हे सब बातो से अवगत करा दिया। चलते समय श्रीप्रकाश ने गाधीजी से पूछा था कि यदि उन्हे रास्ते मे रोक लिया गया, तो वह क्या करेंगे और यदि पहुच गये तो क्या वहा के अधिकारियो को सूचना दे? गाधीजी ने उत्तर दिया था, "वे लोग तुम्हे राज्य से बाहर निकाल दे तो तुम फिर जाने का प्रयत्न करना और यदि पहुच जाओ तो किसीको सूचना देने की आवश्यकता नही। वे स्वयं ही तुम्हे बुलायेगे।"

सचमुच ही उनके आश्चर्य की सीमा न रही, जब उनके जोधपुर पहुचने के दो घटे के भीतर ही वहा के नायब दीवान धर्मनारायण काक के कार्यालय का एक कर्मचारी वहा आया और बोला, "दीवानसाहब सर डोनाल्ड फील्ड इस समय जोधपुर मे नही है, पर यदि आप कल दिन मे अमुक समय सचिवालय आये तो नायब दीवानसाहब आपसे मिलना चाहेगे।"

गलती स्वीकार कर ली होती तो नम्रता सीखती

दोपहर को प्रतिदिन गाधीजी मिट्टी की पट्टी पेट पर रखकर सोते थे। मिट्टी विखर न जाय, इसलिए उसपर एक कपडा लपेटकर सेफ्टी पिन लगा दी जाती थी। एक दिन ऐसा हुआ कि वह पिन प्रमादवश दूसरी जगह रख दी गई। जो लड़की पट्टी तैयार करती थी वह उसे खोजने पर भी न पा सकी। गाधीजी अप्रसन्न होगे, यह डर भी उसे था, इसलिए उसी आकार की एक दूसरी पिन उसने वहा लगा दी। वेचारी, वह यह कहां जानती थी कि गाधीजी की वह पिन एक विशेप प्रकार की होती थी, जिसमे खरोच न लग सके। सयोगवश किताबो की अलमारी मे रखी हुई वह पिन गाधीजी को मिल गई। उस दिन जव वह लडकी पट्टी वाधने आई, तो गाधीजी ने उससे पूछा, "यह पिन कहा से आई?"

लड़की ने उत्तर दिया, "गुसलखाने मे गिर गई थी, वही से मिली है।"

गाधीजी बोले, "देख, पिन तो यह है। तू तनिक से डर के कारण एक पिन के लिए झूठ बोली। अगर तूने गलती स्वीकार कर ली होती तो नम्रता सीखती। ऐसी छोटी-सी वस्तु के लिए झूठ बोलने की आदत कई बार बहुत बडा रूप ले लेती है।"

सत्य ही मेरा राजमार्ग था

एक बार श्री घनश्यामदास बिडला गाधीजी के साथ बात-चीत कर रहे थे। सहसा वछडे की चर्चा छिड गई। गाधीजी ने एक मरणासन्न बछडे की व्यथा को न सहकर उसे तुरन्त मरण-दान देने का प्रबन्ध किया था। बिडलाजी बोले, "महात्माजी, श्रीकृष्ण ने भी वछडा मारा था, किन्तु वह तो आलकारिक जमाना था। इसलिए बछडे का वत्सासुर हो गया, लेकिन इस बीसवी शताब्दी मे तो लोग सीधी-सादी भाषा मे बोलते है। इसलिए आपके इस काम ने काफी हलचल पैदा कर दी है। आपने वहुत-से साहस के काम किये है, किन्तु इसमे तो हद हो गई है। मुझे तो मालूम होता है कि आपने इससे अधिक साहस का काम अपने जीवन मे कोई और नही किया।"

गाधीजी बोले, "ऐसी क्या बात है ? मैने तो सबकुछ सहज भाव से ही किया है।"

बिडलाजी ने पूछा, "अच्छा, आपने ऐसा कौन-सा काम किया है, जिसे साहस की दृष्टि से आप अपने जीवन मे ऊचे-से-ऊचा स्थान दे मके।"

गाधीजी बोले, "इस दृष्टि से तो मैने कभी विचार नही किया। किन्तु मै समझता हू कि बारडोली सत्याग्रह स्थगित करके मैने बहुत वडे साहस का परिचय दिया है। चौबीस घटे पहले सरकार को चुनौती देकर ललकारना और फिर अचानक

सत्याग्रह स्थगित कर देना, यह अपने-आपको बेहद हास्यास्पद बनाना था। किन्तु मैं तनिक भी नही हिचका। जो सत्य था, वही मेरा राजमार्ग था। इसीलिए मेरी हंसी होगी, इस विचार ने मुझे कभी भयभीत नही किया। मेरे जीवन के बडे साहसिक कामो मे यह एक था, ऐसा मै मानता हू।"

बिडलाजी ने कहा, "सविनय अवज्ञा आन्दोलन अचानक बन्द करना पडा, इससे आपको क्लेश नही हुआ ?"

गाधीजी ने दृढता से उत्तर दिया, "किंचित भी नही।"

: २५ :

मैं तुम्हारे पैरो पड़ता हूं...

गांधीजी उन दिनो उत्तर भारत की यात्रा पर थे। १९२१ का प्रारम्भ था। जनता मे उमडती हुई भावनाए चरम सीमा पर थी। हर स्टेशन पर अपार भीड इकट्ठी हो जाती थी। बड़ी-बड़ी लाठियो और मशालोवाले निशान आदर कान फोडनेवाली

करने पर भी लोग पटरी पर से नही हटे। कहने लगे, "जबतक दर्शन नही हो जाते तवतक गाडी को चलने ही नही देगे।"

महादेवभाई ने बार-बार अनुनय-विनय की, पर वे नही हटे। फिर क्रोध मे भरकर न कहने योग्य शब्द कहे, लेकिन उनपर कोई असर नही हुआ। बोले, "भगवान के दर्शन करने आये है, इसमें शर्म किस बात की!"

इन सब उपद्रवो के कारण गाडी बहुत देर मे चली, लेकिन आगे कही भी तो शान्ति नही मिली। गाधीजी जरा भी न सो सके। आखिर डेढ बजे एक स्टेशन पर उठकर वह स्वय भीड के सामने आये, विनती की, "मेहरबानी करके आप जाइये। इतनी रात गये क्यो तग करते है!"

इसके उत्तर मे जोरदार हर्षनाद हुआ। गाधीजी ने फिर विनती की। लेकिन कौन सुननेवाला था! तभी सहसा गाधीजी की सौम्य मूर्ति विकृत हो उठी। इतनी विकृत कि महादेवभाई काप उठे। ऐसी क्रुद्ध दशा मे उन्होने गाधीजी को पहले कभी नही देखा था। गाधीजी ने अपना माथा पीटकर कहा, "तुम्हारे पैरो पडता हू, भले बनकर यहा से हट जाओ।"

भीड अब भी नही हटी। लोगो की उद्धतत्ता की हद हो गई। गाधीजी ने तीन बार अपना माथा पीटा तब कही जाकर वे लोग शान्त हुए।

इसमें कौन-सा खलल पड़ जाता !

उन दिनो रांची में स्वराज्य-पक्ष की परिषद थी। एक दिन सवेरे के समय गाधीजी कई नेताओ के साथ मच पर वैठे हुए वहुत ही आवश्यक राजनैतिक चर्चा में व्यस्त थे। उन्हीमे मीनू मसानी भी थे। उसी समय कोई व्यक्ति उनके (मसानी) नाम की चिट्ठी लेकर आया। चन्द्रशकर शुक्ल ने, जो उस समय गाधीजी के साथ काम करते थे, वह चिट्ठी लेकर अपने पास रख ली।

आधे घटे के वाद वह चर्चा समाप्त हुई। मसानी चले गये, तव कही जाकर शुक्ल ने वह चिट्ठी गाधीजी को दी। गाधीजी ने पूछा, "यह चिट्ठी कव आई थी।"

शुक्ल ने जवाव दिया, "करीव आधा घटा हुआ होगा, लेकिन आप जरूरी वाते कर रहे थे, इसलिए उस समय नही दे सका।"

गाधीजी वोले, "दे क्यो नही सके? आते ही दे देनी चाहिए थी। इसमे कौन-सा खलल पड जाता? तुम जानते हो मसानी कौन है?"

चन्द्रशकर शुक्ल ने उत्तर दिया, "नही।"

गाधीजी को वडा आश्चर्य हुआ। वोले, "इनके पिता से मेरा वहुत पुराना परिचय है। जाओ, उन्हे ढूढ निकालो। उन्हे यही खाना खिलाना और यही ठहराना।"

प्रार्थना समाप्त हुई। गाधीजी बोलने लगे, "आज तो मेरा मन पाप का बासा हो गया है। मोतीलाल तो मेरे सगे भाई के समान है। इनसे तो मुझे कभी पर्दा नही हुआ। मैं तो इनसे सबकुछ कह सकता हू। अपने जी का रहस्य भी खोल सकता हू। फिर भी अभी इन्होने जो अपनी सिगरेट जलाई, उसे मैंने देखा, पर मै देखकर चुप हो गया। मेरा फर्ज था कि मै इनसे कहू कि प्रार्थना मे सिगरेट नही पी जा सकती है, पर मै अपने मन को दबाकर बैठ गया। मन तो पाप को हजम नही कर सकता। फिर प्रार्थना मे मन लगना कैसे सम्भव होता। मेरा मन साफ होता, तो मै इनको सिगरेट बुझाने को अवश्य कहता, पर मेरे मन में आज खोट आ गया। मुझे ऐसा लगा कि मोतीलाल मुझसे रुष्ट है। वह प्रार्थना भी छोडकर न चले जाय, ऐसा डर मुझे लगा। मोतीलाल तो मुझे प्यार करते है, सो मै जानता हू। फिर मुझे डर कैसा ? डर तो पाप की परछाई को कहते है।"

गाधीजी बोल रहे थे कि मोतीलालजी की घिग्घी बध गई। सिगरेट बिना बुझाए दूर फेककर रूमाल से आसू पोछते हुए वह फफक-फफककर रोने लगे।

: २९ :

एक-एक झाड़ू अपने हाथ में ले लो

उडीसा मे गाधीजी की पदयात्रा चल रही थी। एक दिन अगले पडाव पर जाने के लिए सब लोग अपना सामान बाधकर

तैयार खडे थे कि चलने के समय जैसे ही एक कार्यकर्ता काग्रेस का झण्डा लेकर आगे आये, गाधीजी ने उन्हे टोककर कहा, "यह हरिजन-यात्रा है। इसमें तो दूसरा ही झण्डा हमारे साथ चलना चाहिए।"

यह कहकर उन्होने एन० आर० मलकानी और वियोगी हरि की ओर देखा। वे कुछ उत्तर दे, इससे पूर्व ही कमाण्डर के स्वर मे उनको गाधीजी का आदेश मिला, "तुम दोनों एक-एक झाडू अपने हाथ मे ले लो। वह हमारी स्वच्छता की प्रतीक होगी। यह सारा ही आन्दोलन हमारे बाहर और भीतर के कूडे-कचरे को साफ करने का आन्दोलन है।"

उनके आदेश का तुरन्त पालन किया गया। मलकानी और वियोगी हरि एक-एक झाडू हाथ में लेकर महात्माजी की आज्ञा के अनुसार आगे-आगे चलने लगे।

: ३० :

कुछ भी हो, परन्तु माफी नहीं मांगी जायगी

सन् १९१९ के मार्च मास मे जब 'यंग इण्डिया' के एक लेख के लिए गाधीजी और महादेवभाई पर हाई कोर्ट मे मामला चला और उनपर अदालत की मान-हानि का आरोप लगाया गया, उस समय बहुत-से मित्रो ने गाधीजी से माफी माग लेने की प्रार्थना की। श्री जिन्ना ने तर्क किया, "गाधीजी, इस बार आप

माफी माग लीजिये। माफी नही मागेगे तो हम आपका बचाव नही कर सकेगे। कानून की दृष्टि से आपने अपराध किया है। अदालत आपको सजा देने के लिए लाचार होगी। ऐसे ही मामले मे इग्लैण्ड मे पार्लमिन्ट के सदस्यो को छ-छ महीने की सजा हो चुकी है। सरकार आपको किस बुनियाद पर छोडेगी ? न छोडे तो हम कानून जाननेवाले सरकार को दोष नही दे सकते।"

गाधीजी ने सहज भाव से उत्तर दिया, "आपकी बात सही है। परन्तु माफी नही मागी जायगी। मेरा कहना मानिये, सरकार मेरा कुछ भी नही कर सकती।"

श्री जिन्ना ने केस रिपोर्ट निकालकर कहा, "गाधीजी, आप गलत आग्रह कर रहे है।"

लेकिन गाधीजी इन तर्को से विचलित होनेवाले नही थे। महादेवभाई का विश्वास था कि जहातक बुद्धि का प्रश्न है, सरकार छोडेगी, यह आशा करना व्यर्थ था, परन्तु अन्तर से एक आवाज उठती थी कि इस बार सरकार उन्हे जेल नही भेजेगी।

दो दिन बाद मालूम हुआ कि सरकार ने कुछ भी नही किया। मामला खत्म हो गया।

आइन्दा मैं स्याही से लिखूंगा

महाबालेश्वर में एक दिन दोपहर को गाधीजी सो रहे थे। कुमारी बनमाला परीख उनके पैरो मे घी मल रही थी कि सहसा उन्होने जोर से हाथ हिलाया, आंखे खोली और फिर मूद ली। जागने पर बनमाला ने पूछा, "यह सब क्या था ?"

दोपहर को वह बोलते नही थे। पास रखे हुए एक कागज के टुकडे पर उन्होने लिखा कि उन्हे सपना आया था। वह सपना भी उन्होने लिख दिया। वह कागज बहुत बारीक था। एक तरफ उसके स्याही से लिखा हुआ था और वह स्याही दूसरी तरफ फूट आई थी। उसपर गाधीजी ने पेंसिल से लिखा। बनमाला उसे पढ न सकी। वह चुपचाप वहा से चली गई और जब कुछ देर बाद लौटी तो उसके हाथ मे एक मजबूत चौकोर कागज था। हाथ के इशारे से गाधीजी ने पूछा, "क्यो ?"

बनमाला ने उत्तर दिया, "बापू, आप तो कागज की बचत करते है और हमारी आखे फूटती है!"

बारीक कागज बनमाला के हाथ मे था। गाधीजी ने उसको वापस मागा। बनमाला बोली, "नही, मै जो कागज लाई हूं, उसी पर लिखिये।"

लेकिन गाधीजी तुले थे कि वह बारीक कागज ही लेगे। बड़ी अनिच्छा से बनमाला ने वह कागज उन्हे दे दिया। तब एक टुकडे पर गाधीजी ने स्याही से लिखा, "मै जानता हू कि मुझे स्याही से

ही लिखना चाहिए, लेकिन इसके लिए यह कागज नही, मै जिम्मेदार हू। आइन्दा मै स्याही से लिखूगा, लेकिन यह कागज मै अपने पास ही रखूगा।"

बनमाला ने उत्तर दिया, "ऐसे कागज ठीक नही होते, बापू। मै दूसरे अच्छे कागज दे दूगी।"

न जाने कितने लोगो ने गाधीजी से यह बात कही होगी, लेकिन उससे उनके कार्यक्रम मे कोई अन्तर नही पडा।

: ३२ :

शरीर के लिए जो आवश्यक है वह उसको देना धर्म है

श्री ब्रजकृष्ण चादीवाला कुछ अस्वस्थ थे। गाधीजी ने उन्हे आश्रम मे बुला भेजा और उनसे इलाज के सबध मे सभी बाते पूछी। श्री चादीवाला ने और बातो के साथ-साथ बताया कि उन्हे डाक्टर ने मलाई खाने की सलाह दी है। गाधीजी बोले, "यहा उसका प्रबन्ध हो जायगा। तुम एक कढाई लाकर बलवन्त को दे दो। वह मलाई तैयार कर देगा।"

लेकिन ब्रजकृष्ण को आश्रम मे मलाई खाना कुछ अच्छा नही लगा। इसलिए उन्होने कढाई लाकर नही दी। एक दिन बीत गया। गाधीजी ने बलवन्तसिह को बुलाकर पूछा, "क्यो, ब्रजकृष्ण के लिए मलाई तैयार की?"

बलवन्तसिह ने उत्तर दिया, "बापूजी, अभी तक कढाई नही

आई है।"

गाधीजी ने उसी समय ब्रजकृष्ण को बुलाया और पूछा, "क्यो ब्रजकृष्ण, अभी तक कढाई क्यो नही लाये ? और तुम्हारे लिए मलाई क्यो नही बनी ?"

ब्रजकृष्ण ने उत्तर दिया, "बापूजी, आश्रम में इतनी खटपट करने मे सकोच होता है।"

गाधीजी ने कहा, "यह तुम्हारी मूर्खता है। शरीर के लिए जो आवश्यक है वह उसको देना धर्म है। जाओ, अभी शहर जाओ और कढाई लेकर आओ।"

बेचारे उसी समय बाजार गये और कढाई लेकर आये। शाम हो आई थी। गाधीजी ने कहा, "सवेरे ब्रजकृष्ण को बीस तोला मलाई मिलनी ही चाहिए।"

उतनी मलाई तैयार करने में बलवन्तसिह को रात मे तीन-चार बार जागना पडा। सौभाग्य से सवेरे तक उतनी मलाई तैयार हो गई। गाधीजी यह देखकर बहुत प्रसन्न हुए और उन्होने ब्रजकृष्ण को आदेश दिया कि वह उस मलाई को खाय।

यह सिलसिला बराबर चलता रहा।

लोकनायक अपने पर काबू पाये बिना कुछ नहीं कर सकता

उस दिन दरवारसाहव गोपालदास गाधीजी से मिलने के लिए आये। उनकी पत्नी भक्तिबहन उनसे भी पहले आ गई थी। गाधीजी से वह पहली बार ही मिल रही थी। गाधीजी बोले, "आपको मैने पहले नही देखा। आपकी बाते वहुत सुनी है। उनमे बोरसद की ही नही, और भी बाते थी।"

फिर बा की ओर मुडकर वोले, "तेरा मुझपर कोई हुक्म चलता है? भक्तिबहन की तो दरवारसाहव पर सत्ता चलती है, परन्तु सुना है, एक वात मे इनकी नही चलती।"

भक्तिबहन यह सब सुनकर शरमा गई। महादेवभाई ने कहा, "दरबारसाहब बीडी को क्षम्य कुलक्षण मानते है।"

तभी आ गये दरबारसाहव। गाधीजी ने उनसे कहा, "आइये, आपने तो बोरसद को खूब सुशोभित किया। ऐसी जीत भारत मे हमे एक भी नही मिली। आप न होते तो वल्लभभाई अकेले क्या कर सकते थे!"

दरबारसाहब ने कहा, "पण्ड्याजी और रविशकरजी भी तो थे।"

बापू बोले, "हा, ये लोग तो पुराने जोगी है, परन्तु बोरसद मे वे अकेले क्या कर सकते थे? आप थे तो ताल्लुके को तैयार कर सके, परन्तु आपके विरुद्ध शिकायत भी आई है। कहते है,

आपने दूसरो पर तो काबू पा लिया है, परन्तु अपने-आपपर बहुत थोडा काबू पाया है। लोकनायक अपने पर काबू पाये बिना कुछ नही कर सकता। आपने बीडी के मामले में भक्तिबहन को खूब सताया है। उपवास भी कराये है। यह बात सच है न ? यह न समझना कि मुझसे अभी-अभी शिकायत की गई है। आपके बारे में यह शिकायत मुझे जेल मे मिली थी। आपसे किसने कहा कि यह कुलक्षण क्षम्य है ?"

दरबारसाहब लज्जित हुए, पर बोले, " 'नवजीवन' में ऐसा आया है।"

गाधीजी ने कहा, "मैने चाय के लिए तो कहा है, परन्तु बीडी के लिए नही।"

दरबारसाहब बोले, "बीडी के लिए भी कहा है।"

गांधीजी ने कहा, "तब तो उस समय मेरी बुद्धि चरने चली गई होगी।"

दरबारसाहब ने सफाई पेश की, "मैने तैंतीस-चौंतीस बार छोडी, लेकिन फिर शुरू कर दी। इसे छोड़ने का काम बड़ा कठिन है।"

गाधीजी ने कहा, "हां, बीडी छोडना बहुत कठिन काम है, शराब छोडने से भी। आप कभी मानेंगे कि मै चोरी करूगा ? परन्तु जब मै ग्यारह वर्ष का था तब मुझे बीडी के जले हुए टुकडे पीने की आदत पडी। मगर इससे क्या तृप्ति होती है ? इसलिए नौकर की जेब से पैसे चुराना शुरू कर दिया। अब यह नही लगता कि शराब पीने की आदत पडी होती तो मैं चोरी भी करता। परन्तु बीडी छोडने का सबसे बड़ा उदाहरण तो भाई

का है। वह किसी समय खूब बीडी पीते थे। मित्रो ने उनसे कहा, आपके जैसे मनुष्य को बीडी पीना शोभा नही देता।"

"उन्होने इस बात को अनुभव किया और उसी दिन से बीडी छोड दी। छोडी सो छोडी। बस एक बार निश्चय कर लेना चाहिए और सर्वथा त्याग कर देना चाहिए। आज इतनी पी ले, कल उससे कम पीवे, परसो उससे भी कम पीवे, इस तरह बीडी नही छूट सकती, परन्तु आपको मैने भाषण सुनने के लिए नही बुलाया। मुझे तो ऐसा लगा कि आपको बधाई दे दू। आपने बडा काम किया है। आप दोनो को मेरी ओर से खूब बधाई।"

. ३४ .

भगवान को भक्तों ने बिगाड़ा है

डाडी-यात्रा के अवसर पर गाधीजी जब आणन्द पहुचे तो वह वहा की 'चरोतर एजूकेशन सोसायटी' मे ठहरे। मौनदिवस होने के कारण वह वहा एक दिन अधिक ठहरे। रात को नीम के पेडोवाले चौक मे उनका बिस्तर लगाया गया। लोहे की पट्टी-वाले पलग पर खादी की ताजी भरी हुई चौडी रिजाई बिछाई गयी। गाधीजी ने उसे देखा। बोले, "इतने चौडे बिस्तर की क्या जरूरत है ?"

और स्वय अपने हाथो से उसकी दोहरी तह करके उसे फिर से बिछाया।

उनके पलग के पास एक कमोड भी रख दिया गया था, जिससे उन्हे सवेरे तकलीफ न हो, लेकिन गाधीजी को यह अच्छा नही लगा। उन्होने कहा, "इसे अपनी जगह से क्यो हटाया गया ? इसे वही रखना चाहिए।"

कमोड को उसके स्थान पर पहुंचा दिया गया। फिर उन्होंने उसके भीतर देखा। वहा साबुन की टिकिया रखी हुई थी। वह बोले, "साबुन भीतर चाहिए या बाहर ?"

साबुन भी बाहर रखा गया।

सबकुछ देखने के बाद ही वह सोने के लिए पलग पर पहुचे और सब भूलो को याद करते हुए बोले, "भगवान को भक्तो ने बिगाडा है।"

उसके बाद दो मिनट के भीतर ही वह गहरी नीद मे सो गये।

: ३५ :

हुर्रे रामदास काका

प्रभुदास गाधी तब केवल छः वर्ष के थे। गाधीजी के साथ फीनिक्स आश्रम (दक्षिण अफ्रीका) मे रहते थे। उन दिनो गाधीजी का यह नियम था कि प्रत्येक व्यक्ति के घर पर कुशल समाचार पूछने जाया करते थे। तब वह जालीदार कपडे की आधी बाह की सफेद कमीज और सफेद पतलून पहनते थे। एक दिन प्रभुदास कुछ देर तो उस कमीज को देखते रहे, फिर उन्होने

इधर-उधर देखा तो पाया कि रामदासकाका वहा नही है। रामदास गाधीजी के तीसरे बेटे का नाम था। उनको न पाकर प्रभुदास ने जोर-जोर से पुकारा, "लामदागकाका, ओ लामदाश काका!"

गाधीजी ने तुरन्त उसे टोका, "लाम्दाश क्या कह रहा है? रामदास कह।"

प्रभुदास ने फिर कहा, "लामदाशकाका"

अब गाधीजी ने सब बच्चो को इकट्ठा किया। बोले, "बच्चो, बोलो, हिप-हिप हुर्रे।"

सबने मिलकर आवाज लगाई, "हिप-हिप हुर्रे।"

फीनिक्स की दिशाए गूज उठी। पाच-सात बार बोलने के बाद गाधीजी प्रभुदास की ओर मुडे। कहा, "बोलो हुर्रे।"

कई बार बोलने के बाद प्रभुदास ठीक बोलने लगा तो उन्होने कहा, "अब बोलो, हुर्रे रामदासकाका।"

प्रभुदास बोला, "हुर्रे रामदासकाका।"

प्रभुदास का उच्चारण शुद्ध हो गया, लेकिन जबतक 'ल' मिटकर पूरी तरह शुद्ध 'र' नही बन गया, तबतक प्रभुदास को मुक्ति नही मिली।

मुझे मदद की जरूरत नहीं है

उन दिनो टाइफाइड ने बडे जोर-शोर से आश्रम पर आक्रमण किया। मीराबहन बहुत सख्त बीमार हुई, नाणावटी तो इतने बीमार हुए कि बेहोश हो गये। उन लोगो ने अस्पताल जाने की बात कही, लेकिन बापू का वही उत्तर था, "मेरे पास कितना भी काम हो तो भी तुम्हारी सेवा में किसी प्रकार की कमी नही आयगी। हा, तुमको मेरा विश्वास न हो तो मै तुमको रोकूगा नही।"

सारी दुनिया का काम करते हुए भी गाधीजी बीमारो की पूरी सेवा-शुश्रूषा करते रहे। तभी चिमनलालभाई को भी टाइफाइड हो गया। वह सबसे खतरनाक था। स्वय गाधीजी को शक हो गया कि चिमनलालभाई शायद नही बचेगे। उनकी पत्नी श्रीमती शकरीबहन अहमदाबाद मे थी। किसीने गाधीजी से कहा, "उनको बुला लिया जाय।"

गांधीजी ने उत्तर दिया, "मुझे मदद की जरूरत नही है और न उसका आना मै यहा ठीक समझता हू। हा, चिमनलाल चाहे तो जरूर बुला सकते है।"

चिमनलालभाई ने इकार कर दिया। बापू ही जब बीमारों की मां पत्नी और डाक्टर सबकुछ बन जाते थे तो किसीको बुलाने की आवश्यकता ही क्या रहती थी! सम्बन्धी जन आकर मोह ही तो पैदा करते है, लेकिन चिमनलालभाई की अवस्था

बडी ही चिन्ताजनक थी। एक रात गांधीजी ने बलवन्तसिह से पहरा देने के लिए कहा। बोले, "हो सकता है, आज रात को ही चिमनलाल चला जाय। हम सबको सावधान रहना चाहिए। हमारी सेवा मे किसी प्रकार की कमी न रहे, तो हमारे लिए बस है।"

जहां गाधीजी की इतनी सावधानी हो, वहा रोग कैसे ठहर सकता है! कुछ दिन के बाद ही चिमनलालभाई की तबीयत सुधर गई और टाइफाइड का आक्रमण, जो आश्रम पर हुआ था, व्यर्थ हो गया।

: ३७

पैर छूने की इकन्नी और लूंगा

हरिजन-कोष के लिए रुपया इकट्ठा करते हुए गाधीजी देहरादून पहुचे। वहा स्त्रियो ने अलग सभा करके दो हजार रुपये की थैली भेट की। उसके बाद महात्माजी का भाषण हुआ और भाषण के बाद वह बोले, "मै तो जेवर भी ले सकता हू। दरिद्रनारायण के लिए अगूठी भी ले सकता हू। इसके लिए मर्दो से क्या पूछना! वह तो स्त्रीधन है और यहा आने की भी जरूरत नही! मै वही आकर ले लूगा।"

वह मच से स्त्रियो के अथाह समुद्र मे उतर पडे। दोनो हाथो की अजलि बनाकर भिखारी के रूप मे घूमने लगे। शोर मच गया, "अरे महात्मा, यह ले, यह ले।"

ऐसे धक्के पडे कि महात्माजी कभी-कभी तो धरती पर पैर भी न टिका पाते थे, लेकिन वह थे कि हँस रहे थे। एक स्त्री अपनी दो अगुलियो मे एक इकन्नी दवाये हाथ ऊपर किये चिल्ला रही थी, "ओ महात्मा, ले, मेरी यह इकन्नी भी लेता जा।"

महात्माजी ने स्त्रियो के सिर के ऊपर से अपनी अजलि बढ़ाते हुए कहा, "ला।"

उसने इकन्नी अजलि मे डाल दी, तो महात्माजी बोले, "अभी तो पैर भी छुएगी न ?"

स्त्री बोली, "हा, छूऊगी।"

"तो फिर पैर छूने की इकन्नी और लूगा।"

ताना-सा देते हुए उस गाव की औरत ने कहा, "किराए पै छुआवे क्या पैर भी तू ?"

गाधीजी ने कहा, "हा।"

भरे जलसे मे श्रीचरणो का सौदा हो गया। उसने एक इकन्नी और दी और महात्माजी ने पैर आगे बढा दिया।

: ३८ :

मैं जल्दी ही प्रस्तावना लिखकर भेजूंगा

श्री जेठालाल गाधी ने आचार्य कृपालानी के लेखो का एक सग्रह तैयार किया था। उनकी वडी इच्छा थी कि उस संग्रह की प्रस्तावना गाधीजी लिखे। उन्होने अपना यह प्रस्ताव उनके

सामने रखा और गाधीजी ने तुरन्त इसे स्वीकार कर लिया।

लेकिन विधि का विधान, ठीक समय पर गाधीजी अस्वस्थ हो गये। श्री महादेव देसाई ने श्री जेठालाल गांधी को लिखा कि ऐसी स्थिति मे उनसे प्रस्तावना लिखवाना उचित नही होगा। उन्हे इस मेहनत से बचा लिया जाय।

श्री जेठालाल ने उसीके अनुसार गांधीजी को पत्र लिख दिया, लेकिन उधर से तुरन्त उत्तर आया, "नही, मै जल्दी ही प्रस्तावना लिखकर भेजूगा।"

और कुछ ही दिन बाद उन्होने न केवल प्रस्तावना लिखकर भेज दी, बल्कि दूसरी और भी सूचनाए लिख भेजी, जिन्हे पुस्तक मे शामिल करना आवश्यक था।

: ३९

ये रुपये हरिजनों की सेवा के लिए हैं

उन दिनो गाधीजी जुहू मे निवास कर रहे थे। एक दिन सोलह-सत्रह वर्ष की एक बालिका बरसात मे भीगती हुई वहां आई और अपनी डायरी मे गाधीजी से हस्ताक्षर करने की प्रार्थना की। उन्होने हस्ताक्षर करने के लिए कलम उठाई ही थी कि कोई भाई बोल उठे, "बापू, इसने पाच रुपये नही दिये।"

बस, कलम रुक गई। बोले, "हस्ताक्षर के लिए तुम्हे पाच रुपये तो देने ही चाहिए।"

बालिका ने उत्तर दिया, "मेरी स्थिति ऐसी नही है कि मै आपको पाच रुपये दे सकू ।"

गाधीजी ने बिना हिचकिचाए कहा, "तो मै दस्तखत भी नही दे सकता ।"

बालिका बोली, "लेकिन बापू, मै पैसे कहा से लाऊ ? मै तो गरीब विद्यार्थिन हू।"

गाधीजी ने उसे समझाने का प्रयत्न करते हुए कहा, "तू गरीब है, तो दस्तखत के बिना भी काम चला सकती है। जानती है कि पाच रुपये हरिजन फण्ड मे जमा होते है ।"

बालिका बोली, "लेकिन मैं तो दस्तखत लेकर ही रहूगी । मै गरीब हू तो क्या इसीलिए मुझे आपके दस्तखत नही मिलेगे ? मै धनवान नही हू, यह क्या मेरा गुनाह है ?"

गाधीजी ने उपाय सुझाया, "तुझे अपने मां-बाप से पैसे लेने चाहिए या फिर दस्तखतो का मोह छोडना चाहिए। तुझे जानना चाहिए कि ये पाच रुपये तुझसे भी अधिक गरीब और दुखी हरिजनो की सेवा के लिए है ।"

बालिका अब भी अडिग थी । बोली, "मेरे मा-बाप की ऐसी स्थिति नही है कि वे पाच रुपये दे सके । आप मुझे दस्तखतों का मोह छोडने को कह रहे है, लेकिन मै दस्तखत लिये बिना नही जा सकती ।"

आसपास कई व्यक्ति खडे हुए थे । उन्हीमें से एक बोल उठे, "बहन, अपने कानों की बालिया निकालकर बापूजी को दे दो ।"

बालिका तुरंत तैयार हो गई, लेकिन वे तो आठ आने की

भी नही थी। सब लोग समझ गये कि यह बालिका सचमुच गरीब है। आखिर एक बन्धु ने सुझाव दिया, "बापूजी, आप इसे दस्तखत दे दीजिये। इसकी ओर से पाच रुपये मैं दिये देता हू। जब इसके पास हो जायगे तो यह मुझे लौटा जायगी।"

बालिका कृतज्ञता से भर उठी और तुरन्त बोली, "जरूर दे दूगी। आमदनी होने पर सबसे पहले आपके रुपये देने का वचन देती हू।"

गाधीजी ने उसी क्षण उसकी डायरी पर हस्ताक्षर कर दिये। अपनी जीत की खुशी से मुस्कराती हुई वह बालिका जिस तरह बरसात मे भीगती हुई आई थी उसी तरह भीगती हुई वापस चली गई।

: ४० :

वाह रे बहादुर ! उस्तरे से इतना डर गये

दक्षिण अफ्रीका मे गाधीजी के साथ उनके भतीजे श्री छगन-लाल गाधी भी थे। एक बार उनके छोटे पुत्र कृष्णदास के गले मे एक गाठ हो गई। पीडा के कारण वह बालक बोल नही सकता था। उसका काटा जाना आवश्यक था। डाक्टर वहा था नही। तब गाधीजी ने स्वय ही उस गाठ को चीरने का निश्चय किया। लेकिन अभी वह पूरी तरह पकी नही थी। उन्होने कहा, "रात को आटे की पुलटिस बाधो और सवेरे गर्म पानी, उस्तरा आदि

तैयार रखो। उसके बाद मुझे बुलवा लेना।"

सवेरे जब उनके पास सन्देशा पहुचा तब वह एक खेत मे घुटने तक ऊची घास को फावडे से साफ करने मे व्यस्त थे। उस समय ऐसा लगता था कि अब घास खोदने के सिवा दुनिया मे उनका कोई और लक्ष्य नही है। बुलाने के लिए प्रभुदास आये थे। कई क्षण तक वह गाधीजी को काम करते देखते खडे रहे। कुछ देर बाद गाधीजी ने उन्हे देखा और पूछा, "कृष्ण के लिए बुलाने आये हो न ? चलो, मै आया।"

उन्होने फावडा अलग रख दिया। पतलून पर लगी हुई मिट्टी झाडी और लडको से कहा, "देखो, अब तुम लोगो की बाते बन्द होनी चाहिए। मेरे सामने तुम काफी खेल चुके। मेरे पीछे तुम्हे आलस्य नही करना। जबतक मै लौटू, काम पूरा हो जाना चाहिए। बडो के सामने आलस्य करो, वह निभा लिया जा सकता है, परन्तु उनके पीठ-पीछे आलस्य करके उनको धोखा नही देना चाहिए।"

यह कहकर वह कृष्णदास के घर पहुचे। लेकिन जब पट्टी खोली तो देखते क्या है कि वह गाठ घुलकर बैठ गई है। सबको बड़ा आश्चर्य हुआ। गाधीजी हॅसते-हॅसते बोले, "वाह रे बहादुर ! उस्तरे से इतना डर गये कि गाठ को ही छिपा दिया ! यह कोई बहादुरी की बात नही है।"

और पाच-सात मिनट इस प्रकार हास-परिहास करने के बाद वह वापस खेत पर लौट गये।

मेरे लिए तुमने कितने व्यक्तियो का समय बिगाड़ा

आश्रम के सयुक्त रसोईघर मे दोसौ स्त्री-पुरुप भोजन करते थे। ठीक समय पर रसोईघर की घण्टी वजती। जिस तरह भोजन करनेवालो के लिए घटी बजती थी उसी तरह परोसनेवालो के लिए भी घटी बजती थी। इसके बाद जो भी व्यक्ति आता उसे बाहर बैठकर दूसरी पक्ति की राह देखनी होती थी। गाधीजी स्वय प्रतिदिन समय पर ही आते थे। एक दिन ऐसा हुआ कि घटी बजने का समय हो गया, लेकिन वह आते दिखाई नही दिये। एक क्षण बाद घटी बजानेवाले सज्जन ने देखा कि दूर पर गाधीजी आ रहे है। वह उनके आने तक रुका रहा। वह पास आ गये तभी उसने घटी बजाई।

गाधीजी को जब यह मालूम हुआ कि उनके कारण परोसने मे एक मिनट की देर हो गई है, तो उन्होने घटी बजानेवाले से कहा, "मेरे लिए तुमने कितने व्यक्तियो का समय बिगाडा। अगर मै देर से आऊ तो मुझे भी बाहर बैठना चाहिए, लेकिन घटी बजाने मे जरा भी देर नही होनी चाहिए।"

तो खादी पहनोगी न ?

टबरा गाव नर्मदा नदी के किनारे पर बसा हुआ है। गाधीजी जब वहा पहुचे तो एक पेड के नीचे मुट्ठीभर आदमी शान्ति से बैठे हुए थे। गाधीजी उनके साथ बाते करने लगे। बहनो की ओर देखकर बोले, "क्यो बहनो, मैने आपका कोई अपराध किया है, जो आप खादी नही पहनती ?"

एक बहन हॅसकर बोली, "नही-नही, अपराध आप क्यों करेगे ? हमने ही किया है।"

गाधीजी ने पूछा, "तो खादी कब पहनोगी ?"

उत्तर मे आह भरकर बुढिया बोली, "स्मशान मे लकडिया पहुच गई है तब क्या पहने ?"

गाधीजी ने कहा, "अरे, ऐसा क्यो कहती है ! मरना तो सभीको है। खादी पहने और मरे। हॅसते-हॅसते मर जाना क्या बुरा है ? खादी नही पहनोगी तो मन-की-मन मे रह जायगी कि अरे, मैने खादी नही पहनी।"

इस वार उस बुढिया का मुख सहज स्मित से दीप्त हो उठा। बोली, "अच्छा, तब तो पहनूगी।"

और चर्चाए हुई। जाने से पहले गाधीजी फिर उस बुढिया मा की तरफ मुडे और बोले, "अच्छा, तो खादी पहनोगी न ? तुम सबकी तरफ से वचन देती हो न ?"

बुढिया ने उत्तर दिया, "हा, वचन तो दे दू, परन्तु मोटी

खादी के बजाय पतली मिले और छपवा दे तो ज्यादा ठीक रहे। और छोटी लडकिया क्या पहने ! उन्हे तो शादी करके ससुराल जाना है।"

गाधीजी ने हँसकर कहा, "ठीक है, ठीक है, जबतक तुम बारीक न कातो तबतक बारीक खादी कैसे मिल सकती है ? तुम कातकर दो तो बुनवा भी दू और छपवा भी दू। और तुम शादी करनेवाली लडकियो की बाते करती हो, तो एक बात पूछता हू। तुम हरीभाई अमीन को जानती हो ?"

बुढिया ने उत्तर दिया, "हा, ये तो महात्मा है।"

गाधीजी बोले, "महात्मा से भी बडे है। देखो, कुछ दिन पहले इनकी भतीजी की शादी हुई थी। ये नियमित कातते है। बारीक सूत कातकर और उसकी दो धोतिया बनवाकर उन्होंने वर को दी। ये खुद मोटी खादी पहनते है। सब घरवाले भी मोटी खादी पहनते है। इनके पास बहुत रुपया है। फिर भी ये मोटी खादी किसलिए पहनते है ? देश के लिए। तुम जैसी कातने लगे, इसलिए। अच्छा, अब बताओ कातोगी और खादी पहनोगी न ?"

सब एक साथ बोल उठी, "हाजी, हाजी।"

अपने दोषों को देखो

दक्षिण अफ्रीका मे गाधीजी ने अनेक प्रयोग किये । आश्रम-जीवन बिताना भी उन्होने वही सीखा । उनके आश्रमो मे सब-कुछ अपने हाथ से करना पडता था । पाठशाला भी चलती थी । स्वय ही पढाते और स्वय ही परीक्षा भी लेते ।

उन्ही दिनो की बात है । एक दिन सब विद्यार्थी पाठशाला मे बैठे गणित के अध्यापक की चर्चा कर रहे थे । एक लडका बोला, "भाई, गणित बापूजी ही पढावे तो अच्छा । छगनलाल-भाई अच्छी तरह समझा नही पाते । कठिन-से-कठिन सवाल को भी बापूजी अच्छी तरह समझा देते है ।"

सयोग की बात कि गाधीजी उस समय दरवाजे के बाहर ही खड़े हुए थे । उन्होने सबकुछ सुन लिया । धीरे-धीरे वह विद्या-र्थियो के सामने आये । उनको देखते ही सब सहम गये । उस दिन गाधीजी ने जो-कुछ पढाना था वह नही पढाया, बल्कि बड़ी गम्भीरता से उनसे कहने लगे, "तुम लोगो की यह कैसी उद्दण्डता है ! आज तुमको मेरे मुकाबले मे छगनलालभाई अयोग्य शिक्षक लगते है तो कल गोखले महाराज की तुलना मे मै अयोग्य लगूगा । तुमको अपनी पढाई से मतलब है या अपने शिक्षक को योग्यता के नम्बर देने से ? जो विद्यार्थी अपने शिक्षक की निन्दा करता है वह चाहे कितना ही बुद्धिमान क्यो न हो, उसकी सारी पढाई शून्य ही रह जायगी । जिस विद्यार्थी मे विनम्रता नही है,

वह कुछ भी ग्रहण नही कर सकता। जो नम्र है, शिक्षक उसे थोडा भी दे तो वह उसे बहुत बनाकर ग्रहण करेगा। तुम्हे अगर दोष देखने है तो अपने दोषो को देखो। शिक्षको का दोष देखो, यह बिल्कुल असह्य है। गणित के शिक्षक छगनलाल ही रहेगे। मेरे पास जिस तरह चित्त लगाकर तुम सवाल करते हो, उसी तरह छगनलाल के पास भी पूरे ध्यान से करने चाहिए। मन मे उनके प्रति आदर रखना चाहिए।"

उसके बाद विद्यार्थियो ने फिर कभी टीका-टिप्पणी नही की।

: ४४ :

ये तीनों मेरे गुरु हैं

गाधीजी की मेज पर तीन बन्दरो का एक खिलौना रहता था। एक व्यक्ति ने एक दिन उनसे पूछा, "बापू, यह खिलौना यहा मेज पर क्यो रखा है ?"

गम्भीरता से उन्होने उत्तर दिया, "ये तीनो मेरे गुरु है।"

फिर कुछ क्षण रुककर बोले, "आज मुझे ठीक-ठीक तो याद नही, लेकिन कई साल पहले यह खिलौना एक चीनी ने महादेव को दिया था। महादेव के पास से यह मेरे पास आ गया। बहुत-सी श्रेष्ठ और महत्वपूर्ण निधिया अब भी चीनी सस्कृति मे जीवित है। यह मामूली खिलौना एक बडी वात कहता है, जो दैनिक जीवन के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। पहला बन्दर जिसने

अपना मुह ढांप रखा है, कहता है—कभी असत्य न बोलो, किसी की निन्दा न करो। दूसरा बन्दर जिसने अपनी आंखे बन्द कर रखी है, कहता है—अपनी आखो से कोई खराबी न देखो।"

फिर वह रुककर धीरे-से बोले, "जब मैं घूमने जाता हू तब मेरा हाथ किसीके कधे पर होता है। मैं उससे कह देता हू कि देखना, मेरी आखे बन्द है। मुझे सभालकर ले जाना और इस बात से मुझे शान्ति और बल मिलता है।"

गम्भीरता से उन्होने आगे कहा, "तीसरा बन्दर हमें सिखाता है कि हम किसीकी बुराई या निन्दा न सुने। कितना बडा उपदेश है यह ! कान का दुरुपयोग आदमी के मन का चैन छीन लेता है और हृदय को अक्षम्य अपराधी बना देता है। हम सभीको जीवन मे ऐसा अनुभव तो होता ही है।"

गाधीजी उस समय खाना खा रहे थे। खाने के बाद उन्होने हाथ धोए और फिर कहा, "इस खिलौने को मै कलामय वस्तु कहता हू। इसका केवल बाहर का रूप ही सुन्दर नही है। इसका आन्तरिक भाव भी मनुष्य-जाति के लिए लाभदायक है। जो कला मानव-जाति को ऊचा नही उठा सकती, जो कला मनुष्यता का कल्याण नही कर सकती, उसे कला नही कहा जा सकता। कला तो मन को पवित्र करके आत्मा को उज्ज्वल बनाती है। इन बन्दरो को मै ज्ञानपूर्वक गुरु कहता हू और जहा जाता हूं अपने साथ ले जाता हू। मुझसे पग-पग पर ये अपनी बात कहते रहते है।"

चर्खे के बिना देश का उद्धार नहीं

फरीदपुर मे होनेवाली बगाल प्रान्तीय परिषद् के अध्यक्ष देशबन्धु चित्तरजन दास थे। इस अवसर पर गाधीजी भी वहा गये। विद्यार्थियो ने उनकी सेवा मे मान-पत्र अर्पण करने का निश्चय किया। जिस समय वे लोग गाधीजी को बुलाने के लिए आये, वह कात रहे थे। हँसते-हँसते बोले, "विद्यार्थी यहा नही आ सकते। मुझे मान-पत्र लेने के लिए जाना ही चाहिए। यदि वे यहा आ सके तो मै मान-पत्र के उत्तर मे भाषण तो दूगा ही, उसके अतिरिक्त कुछ और भी दूगा।"

उनका यह सदेशा लेकर आचार्य कृपालानी विद्यार्थियो के पास गये और बोले, "देखो, गाधीजी को कातते हुए लाने की अपेक्षा कातते हुए देखना क्या अच्छा नही होगा? गाधीजी सिपाही है। तुम लोग भी सिपाहियो की तरह कवायद करते हुए दो-दो तीन-तीन की कतार मे वहा आ जाओ। इस टीन की चादरोवाली नाट्यशाला मे तो झुलसा डालनेवाली गर्मी है। इसकी अपेक्षा खुली हवा मे बैठना अच्छा है।"

विद्यार्थियो और उनके नेता सुहरावर्दी ने इस सुझाव को तुरन्त मान लिया और 'वन्देमातरम्' पुकारते हुए वे गाधीजी के डेरे पर आ गये। गाधीजी को जगाया गया। दोपहर के दो बजे विद्यार्थी बिना आनाकानी किये चले आये, यह देखकर वह बहुत खुश हुए। वह तुरन्त चर्खा लेकर चबूतरे पर जा बैठे। उनके

सामने सहन मे विद्यार्थी बैठे। सुहरावर्दी ने मान-पत्र पढा। कातते-कातते उसका उत्तर देते हुए गाधीजी बोले, "तुमने मान-पत्र दिया, इसके लिए मै तुम्हारा आभार मानता हू। इससे अधिक आभार इस बात का मानता हू कि तुमने यहातक आने का कष्ट किया। मैने तुम्हे जो सदेशा भेजा था, वह तो आधा मजाक मे ही था। लेकिन मुझे तुम्हे यह समझाना भी था कि कातना भारत के उद्धार के लिए अनिवार्य धर्म है। जैसे-जैसे पूनी से धागा निकलता जाता है वैसे-वैसे मै भारत के भाग्य की डोरी खीचता जा रहा हू। मेरा विश्वास दृढ होता जा रहा है कि चर्खे के बिना देश का उद्धार नही। इसलिए मै चाहता हूं कि जो समय गप्पे लगाने मे और खेलने-कूदने मे विताते हो, उसमे से केवल आधा घटा निकालकर कातने के लिए देते रहो।"

: ४६ :

समय पूरा हो चुका है

समय-असमय विश्वभर के अनेक पत्रकार गाधीजी से मिलने का प्रयत्न किया करते थे। उस दिन वह समय किसी पत्र-कार से मिलने के लिए नही था, लेकिन एक जर्मन पत्रकार आ पहुचे और महादेवभाई के पीछे पड गये। वोले, "किसी भी तरह हो, मुझे गाधीजी से मिला दीजिए। केवल दो मिनट के लिए ही मिलूगा।"

पहले तो महादेवभाई टालते रहे, लेकिन फिर पिघल गये और गाधीजी के पास आकर बोले, "एक जर्मन पत्रकार केवल दो मिनट के लिए आना चाहता है। उसका बडा आग्रह है। दो मिनट दे दीजिये।"

गाधीजी ने कहा, "ले आओ।"

पत्रकार आया। शिष्टाचार की बाते करने मे एक मिनट निकल गया। फिर वह अपनी बात कहने के लिए भूमिका बाधने लगा। दूसरा मिनट भी समाप्त हो गया। गाधीजी ने तुरन्त अपनी घडी उसके सामने कर दी और इशारे से कहा, "समय पूरा हो चुका है, आप जा सकते है।"

उस दिन जर्मन पत्रकार को सचमुच निराश ही लौट जाना पडा।

. ४७

असत्याचरण से बचना चाहिए

दक्षिण अफ्रीका मे जब गाधीजी आश्रम बनाकर रहते थे तो अखबार भी निकालते थे। उसका सब काम आश्रम के निवासी अपने हाथ से ही करते थे। विद्यार्थी भी काम मे मदद करते थे।

आमतौर से छापाखाने मे विद्यार्थियो के काम के दो घटे रहते थे, परन्तु शुक्रवार के दिन दोपहर तक और आवश्यकता होने पर शाम को देर तक काम करना पडता था, क्योकि शनि-

वार को सवेरे ही अखबार डाक में डालना होता था। उस दिन लोग इतने खुश होकर काम करते थे मानो कोई उत्सव हो। अलग-अलग टोलियो मे होड लग जाती कि देखे, कौन पहले छपे अखवारो को मोड लेता है। कटाईवाले जीतते है या लोहे के तार से टाके लगाने की मशीनवाले, या बडल बाधनेवाले। इस होड को गाधीजी सदा प्रोत्साहित करते रहते थे। ऐसा करने से काम बहुत जल्दी समाप्त हो जाता था।

एक बार क्या हुआ कि जिस टोली मे प्रभुदास थे वह इस होड मे हार गई। जोरो की तालिया बजी। उस टोली ने वडी तत्परता से काम किया था, फिर भी तालिया बज गई, यह बात उनको अच्छी नही लगी। उसके सब सदस्य खिसिया गये। लेकिन थोडी देर बाद पता चला कि उस टोली के साथ छल किया गया था। अखबारो की एक बडी गड्डी उनसे छिपाकर रख दी गई थी। वही अन्त में गाधीजी के सामने पेश की गई। प्रभुदास को वडा क्रोध आया। रोते-रोते वह गाधीजी के पास पहुचे और यह कहानी कह-सुनाई।

शाम की प्रार्थना के बाद गाधीजी ने इस बात की चर्चा की। जिन लडको ने ऐसा किया था उन्हे डाटा, कहा, "खेल मे या होड मे असत्याचरण से वचना चाहिए।"

प्रभुदास को बडी सान्त्वना मिली। लेकिन कई दिन वाद जब प्रार्थना के उपरान्त गाधीजी रामायण के अर्थ समझा रहे थे तो चुगली करने का प्रसग आया। तव गांधीजी ने "चुगली नही करनी चाहिए" यह समझाते हुए कहा, "लडको के आपस के खेल मे कही गडवड़ हो जाय तो चुगलखोर उसी तरह द ै ड़

शिकायत करने आयगा जैसे उस दिन शुक्रवार को प्रभुदास आया था।"

उसके बाद प्रभुदास फिर कभी चुगली करने का साहस नही कर सके।

: ४८ .

बहुतों को स्वेच्छा से भिखारी बनना ही पड़ता है

बगाल के सुप्रसिद्ध गाधीवादी नेता डा० प्रफुल्लचन्द्र घोष मलिकदा के रहनेवाले है। मलिकदा खादी का बडा केन्द्र रहा है। गाधीजी बगाल की यात्रा करते हुए वहा पहुचे। उन्होने बारीक खादी देखकर आश्चर्य प्रकट किया। माखनलाल सेन, जो कभी अराजकतावादियो के सरदार थे, कातने मे भी सर्वश्रेष्ठ थे। गाधीजी यह सब देखकर बहुत प्रसन्न हुए। वह वापस लौट रहे थे कि सहसा उन्होने डा० घोष की ओर देखकर पूछा, "आपका घर तो देखा ही नहीं। उसे देखे बिना कैसे काम चल सकता है?"

फिर कुछ झाडिया पार करके डा० घोष के घर आये। बीस फुट लम्बा और दस फुट चौडा छोटा-सा घर देखकर, जिसमे डा० घोष के माता-पिता और भाई-बहनो का बडा परिवार रहता था, गाधीजी ने पूछा, "इस घर मे आप उठते-बैठते है?"

डा० घोष ने उत्तर दिया, "जीहा।"

"सोते भी इसीमे है? पढाई भी इसीमें करते है?"

"जीहा।"

डा० घोष इस गाव मे पैदा हुए। कलकत्ता जाकर डी० एस-सी० की उपाधि ली, फिर पाचसौ रुपये मासिक वेतन पर टक-साल में नौकर हो गये। लेकिन जैसे ही असहयोग आन्दोलन आरम्भ हुआ, वह नौकरी छोडकर उस दल मे भर्ती हो गये। उनकी एक वहन इस यात्रा मे गाधीजी के साथ थी। वह वहुत वोलती थी। गाधीजी ने प्रफुल्लवाबू से पूछा, "अपनी वहन को कहा पढाते हो?"

प्रफुल्लवावू ने उत्तर दिया, "भगिनी निवेदिता की कन्या-शाला कलकत्ता मे।"

"खर्च कहा से जुटाते हो?"

"पन्द्रह रुपये खर्च होता है। वह मेरा मित्र देता है। मैने तो जव नौकरी छोडी तव मेरे पास डेढसौ रुपये थे। उसीसे वहन की शिक्षा शुरू की थी।"

गांधीजी वोले, "ऐसा ही होता है। मुझे तुमपर जरा भी दया नही आ रही। जहा सारे समाज की पुनर्रचना करनी होती है, वहा वहुतो को स्वेच्छा से भिखारी वनना ही पडता है।"

ऐश-आराम से जीवन बिताना पाप है

गाधीजी जहा भी जाते थे, पत्र-प्रतिनिधि वही पहुच जाते थे। नोआखाली-प्रवास के दिनो मे भी उन्होने गाधीजी का पीछा नही छोड़ा। वे उनसे नाना प्रकार के प्रश्न करते रहते थे। एक दिन एक प्रतिनिधि ने पूछा, "गाधीजी, आपने सन् १९२५ मे कहा था कि मैं शासन विधान मे यह धारा रखूगा कि स्वतत्र भारत मे मत देने का अधिकार उसीको होगा जो शारीरिक परिश्रम से राज्य की कुछ-न-कुछ सेवा कर सके। क्या आप इस बात पर अब भी कायम है?"

गाधीजी ने उत्तर दिया, "इस बात पर तो मैं मरते दम तक कायम रहूंगा। भगवान ने मनुष्य को बनाया है। इसलिए प्रत्येक मनुष्य का धर्म है कि वह काम किये बिना खाना न खाये। जिसके पास रुपये है, वह रुपये दे और सबके साथ हाथ-पैर चलाकर खाये। बुद्धि से रुपया बटोरकर भोग-विलास के साधन पैदा करना और ऐश-आराम से जीवन बिताना पाप है।"

जो जेल गये हैं उनके लिए क्या करोगे ?

एक दिन गाधीजी वच्चो को किसी गीत का अर्थ समझा रहे थे । अन्त मे वोले, " 'जन्मभूमि-व्रत' का अर्थ जानते हो न ?"

लेकिन वच्चे उसका अर्थ नही वता सके । तव उन्होने ही कहा, "इस व्रत के पालन करने का मतलव है अपने दुखी भाई-वहनो की सेवा करना । जो दुखी हो, उनके लिए कुछ-न-कुछ दु ख स्वय उठाना । क्यो, अव तो समझ गये न ?"

वच्चो ने उत्तर दिया, "जीहा, समझ गये ।"

गाधीजी वोले, "अव कहो, जो जेल गये है उनके लिए तुम क्या करोगे ? मा-वाप, भाई-वहन, ये लोग जेल चले जाय तव क्या हमे मौज उडानी चाहिए ? उन लोगो को जेल मे जव अच्छा खाना न मिले, घी-दूव न मिले तो हम लोग मिष्ठान्न कैसे खा सकते है ? मै तुम सवसे इतना ही चाहता हू कि तुम सभी वालक अलोना खाना शुरू कर दो । हमारे वगीचे मे ढेर-के-ढेर फल होते है । इसके अलावा हम रोटी ले सकते है । जेल मे तो उन लोगो को इतना भी नसीव नही होता । वोलो, तुम्हे मजूर है ? '

वच्चे सहसा इसके लिए कैसे तैयार हो सकते थे ? तव उन्होने उन्हे अलग-अलग समझाया । तरह-तरह के फलो और मुरब्बो के नाम लिये, परन्तु जव देखा कि वच्चे नमक छोडने मे सकोच करते है तो कहा, 'अच्छा, मिर्च, मसालेदार चटपटा

शाक, कढी, खिचडी आदि नमकीन भोजन हर रविवार को मिल जाया करेगा। सप्ताह मे छ दिन ही अलोना रहेगा। अब तो ठीक है ?"

रविवार का अपवाद मिल जाने के कारण सब बच्चे उत्साह मे आ गये और उन्होने छः दिन अलोना लेना स्वीकार कर लिया। लेकिन तभी गाधीजी ने एक और नया प्रस्ताव उनके सामने रखा। देवदास से कहा, "क्यो देवा, कल सुबह से चार बजे उठा दू न ? अब हमे कठोर जीवन बिताने का आरम्भ कर देना चाहिए।"

देवदास तत्काल इसका जवाब न दे सके, तो गाधीजी ने प्रभुदास पर जोर डाला। हिचकिचाते हुए उन्होने उत्तर दिया, "उठूगा तो सही, पर नियमपूर्वक नही उठ पाऊगा।"

गाधीजी ने बच्चो को फिर समझाया, "अगर तुम लोग चार बजे उठना भी स्वीकार नही करना चाहते तो सबके साथ जेल जाने के लिए कैसे तैयार हो गये थे ? जेल मे चार बजे उठने के मुकाबले कही अधिक कठिनाइया उठानी पडती।"

इस अन्तिम वाक्य ने बच्चो को विवश कर दिया और उन्होने गाधीजी के इस प्रस्ताव को भी स्वीकार कर लिया।

: ५१ :

भगवान का भजन कर

ढाका मे एक रोज एक पचहत्तर वर्ष का बूढा गाधीजी के सामने पेश किया गया। वह तीस-चालीस मील से चलकर आया था और दर्शनो के लिए रो रहा था। सामने आते ही उसने तुरन्त अपने माथे पर हाथ रखने की माग की। गाधीजी ने सोचा, ऐसा करने से वह जल्दी चला जायगा। इसलिए बिना एक शब्द बोले उन्होने उसके सिर पर हाथ रख दिया।

परन्तु हाथ का रखना था कि वह आवेश में आ गया और गाधीजी के पैरो मे लोट-पोट होकर रोने लगा। उसके गले मे गाधीजी और बा की एक तस्वीर लटकी हुई थी। आवेश का ज्वार जब जरा ठडा पडा तब उसने कहा, "मै नामशूद्र हू। दस वर्ष पहले मेरे पैरो को लकवा मार गया था। बिस्तर से उठा नही जाता था। भगवान से मौत मागता था। अनेक दवाइया की, कुछ लाभ नही हुआ। तब आपका नाम लिया और आज मैं चलने योग्य हो गया हू।"

यह कहकर वह फिर गाधीजी के चरणो मे लोटने लगा। गाधीजी ने कहा, "भाई, भगवान का भजन कर। उन्होने ही तुझे अच्छा किया है। गाधी मे किसीको अच्छा करने की ताकत नही है।"

परन्तु वह किसकी सुननेवाला था! अत मे गाधीजी ने उससे कहा, "भाई, अब तुम यहा से चले जाओ और अगर मेरा

कहना मानते हो तो गले से यह चित्र उतार दो।"

यह सुनकर उसने वह चित्र तुरन्त गले से निकाल लिया और वहा से चला गया। उसने सोचा होगा, जिन गाधी महाराज ने उसका लकवा ठीक किया है और जिनका चित्र वह गले मे डाले फिरता है, शायद वह गाधी यह नही है।

५२

राम-रटन्त दिल से होना चाहिए

१९४७ मे देश जब साम्प्रदायिकता की आग मे झुलस रहा था, उस समय गाधीजी बगाल, बिहार, दिल्ली, उत्तर प्रदेश सब कही उस आग को बुझाते घूम रहे थे। मार्च मे वह बिहार मे थे। मनु गाधी उनके साथ थी। सहसा वह अस्वस्थ हो गई। नाक से खून जाने लगा। एक दिन डाक्टर गाधीजी की जाच करने के लिए आये। खान अब्दुल गफ्फार खा उनके साथ थे। डाक्टर ने उनकी भी जाच की। उसके बाद मनुबहन की बारी आई। उसकी जाच गाधीजी ने अपनी देखरेख मे कराई। फिर सब लोग घूमने के लिए चले गये। वहा से लौटने पर मालिश के समय उन्होने मनु से कहा, "जब डाक्टर तुम्हारी जाच कर रहे थे, तुमने मुझे वहा रहने के लिए मना कर दिया था। शायद तुम्हारे मन मे यह खयाल था कि इतने समय मे मै अपना कुछ और काम कर लूगा, परन्तु जितने महत्व का मेरा दूसरा काम है, उतने ही महत्व का काम तुम्हारी देखरेख का भी है। मुझपर इस समय मा का कर्त्तव्य

है। तुम्हारी नाक मे से गर्मी का मौसम न होने पर भी असाधारण खून गिरता है, उससे तुम्हे जो नुकसान हो रहा है, वह तुम बिना सकोच के डाक्टर से कह सकोगी, इसका मुझे अभी तक विश्वास नही था। तुम्हे शर्मीलापन और सकोच छोडना चाहिए।"

गाधीजी मनु को यह सब समझा ही रहे थे कि उसकी नाक से एकदम खून की धार बह निकली। उन्होने तुरन्त उसे बिठा दिया। प्रेम से उसकी पीठ सहलाने लगे। यह देखकर मनु की आखो में आसू भर आये। उसे गाधीजी से सेवा करानी पडी, इसका उसे बहुत दु ख था। गाधीजी जैसे सबकुछ समझ गये। वात्सल्य-भरे स्वर मे बोले, "ऐसा लगता है कि मै कुछ कहू, उसका भी तुम्हारे दिमाग पर असर होता है। तुम बहुत भावुक हो। इसलिए मस्तिष्क के दबाव के कारण नाक से खून वह सकता है। तमाम शारीरिक रोगो का आधार हमारी मानसिक स्थिति पर है। इतनी बात तुम समझ लोगी तो यह नकसीर का रोग अपने-आप चला जायगा, इसमे मुझे जरा भी शका नही। तुम्हारे चेहरे से लगता है कि जो कुछ मै कहता हू, उसे तुम गम्भीरतापूर्वक कुछ भार रूप मानकर मस्तिप्क को थकाती हो। ठीक है, गम्भीरता से प्रौढता आयगी, परन्तु वह कब होनी चाहिए और कब नही, इसका तुम्हे विचार करना चाहिए कभी-कभी १७ वर्ष की होने पर भी तुम ७० वर्ष की लगती हो। यह दृश्य देखना मुझे जरा भी अच्छा नही लगता। इस उम्र मे तो हँसना, खेलना-कूदना, खाना-पीना और कमर कसकर काम करना चाहिए। दूसरे के काम मे तुम्हे आलस्य नही आता, परन्तु अपने प्रति तुम आलस्य रखती हो। यह बिलकुल ठीक नही है। विवेकपूर्ण, व्यावहारिक

गाम्भीर्य जब तुममे आयगा तब कितने ही जटिल प्रश्न हो तो भी चेहरा और मन स्मितपूर्वक उनका जवाब देंगे। ऐसी मुस्कराहट के दो अर्थ होते है, एक तो बेहयाई की मुस्कराहट और दूसरी अपनी भूल समझकर दुबारा वह भूल न करने के आनन्द की मुस्कराहट।"

इसके बाद मनु को वात्सल्यपूर्वक छाती से लगाकर गाधीजी बोले, "अब अगर तुम अपने मन को दृढ कर लोगी तो आगे कभी नकसीर नही फूटेगी। रामरटन्त दिल से होनी चाहिए। मन की प्रफुल्लता के साथ यह मुख्य शर्त जरूर होनी चाहिए।"

· ५३ ·

चर्खे के लिए जितने नाच नचाएं नाचने को तैयार हूं

बगाल के प्रवास मे गाधीजी मेमनसिह गये और वहा के बडे जमीदार के बहुत आग्रह पर उन्हीके पास ठहरे थे। खादी से उन्हे बडा प्रेम था। बगाल मे बहुत बातो मे जो रस, सुरुचि और औचित्य मालूम होता है वह भी यहा देखने मे आया।

बहुत-से जमीदार गाधीजी से मिलने आये। उन सबसे खादी के सबध मे खूब बाते हुई, लेकिन उन दिनो बरसात बहुत हो रही थी। इसलिए आम सभा नही हो सकी और स्वय गाधीजी को भी सर्दी लग जाने के कारण ज्वर-सा हो गया। इसलिए यह निश्चय किया गया कि जिला बोर्ड का मान-पत्र बगले मे ही

दिया जाय, परन्तु प्रश्न उठा कि लोगो से कैसे मिला जायगा ?

महाराजा ने सुझाव दिया, "आपका स्वास्थ्य ठीक नही है। आप बरामदे में एक सोफे पर लेटे रहे और लोग एक दरवाजे से घुसकर दूसरे दरवाजे से चले जाय।"

गाधीजी ने पूछा, "इतनी बरसात मे लोग आये है ?"

पता लगा, हजारो लोग छतरी-सहित और बिना छतरी के बाहर खडे है। अब तो गाधीजी ने महाराजा का सुझाव मान लिया। सोफा बरामदे मे रखा गया। गाधीजी अपने सामने चर्खा रखकर उसपर बैठे। उस दिन दोपहर के तीन बजे से शाम के छ बजे तक हजारो व्यक्ति गाधीजी के दर्शन करते हुए उनके सामने से गुजरे। कुछ चबूतरे की सीढिया चढकर चर्खे का स्पर्श करते थे। कुछ सोफे को छू लेते थे, क्योकि वे जानते थे कि गाधीजी की तबीयत ठीक नही है। कुछ समय तक गाधीजी कातते रहे, फिर लेटे रहे। हजारो की भीड, बरसात की झडी, आराम क्या मिलता ? शाम को शरीर टूट रहा था। महाराजा ने कहा, "आपको बडी तकलीफ हुई।"

गाधीजी बोले, "तकलीफ तो सचमुच हुई, परन्तु मै तो चर्खे के लिए जितने नाच नचाए उतने ही नाचने को तैयार हू। इतना करने पर भी लोग चर्खे और खादी के बारे में मेरी बात मानते हो, तो भले ही ऐसा हो।"

शरीर को स्वस्थ रखने के लिए इतना भोजन काफी है

हिन्दी के सुप्रसिद्ध पत्रकार और लेखक ठाकुर श्रीनाथसिह सन् १९३७ मे गाधीजी से मिलने के लिए वर्धा गये थे। तब गाधीजी मगनवाडी मे रहते थे। वहा सतरो का एक विशाल बगीचा था। ठाकुरसाहब उसे देखकर बहुत प्रसन्न हुए। सोचा, सतरे खूब खाने को मिलेगे। लेकिन गाधीजी ने कहा, "सतरे खाने के लिए नही, बिक्री के लिए है। जमनालाल बजाज ने यह बाग मुझे जनता की सेवा के लिए दिया है, मौज उडाने के लिए नही।"

इसपर ठाकुरसाहब ने भोजन के सबध मे अनेक प्रश्न किये। उनका कौतूहल देखकर गाधीजी ने उन्हे अपने साथ भोजन के लिए आमत्रित किया।

उस दिन पुरुषोत्तमदास टण्डन, एक जापानी और दो अमरीकी सज्जन भी भोजन पर आमत्रित थे। गोबर से स्वच्छ किये फर्श पर सब लोग खाना खाने बैठे। समय पर लडकियो ने सबके सामने एक-एक थाली और दो-दो कटोरिया लाकर रखी। एक कटोरी मे मट्ठा था, दूसरी मे आलू-शकरकन्द का साग। नीम की चटनी और जरा-जरा-सा गुड भी थाली मे रखा हुआ था। गाधीजी बोले, "हम गरीब लोग अपने मेहमानो को इससे अधिक क्या खिला सकते है! जो बढिया भोजन खानेवाले

है, वे तो जमनालाल के यहा ठहरते है, लेकिन मै मानता हू कि शरीर को स्वस्थ रखने के लिए इतना भोजन काफी है।"

कस्तूरबा रोटी परोसने के लिए बाहर आई। बासी रोटिया भी थी, लेकिन वे मेहमानो को नही दी गई। श्रीनाथसिह ने कहा, "बापूजी, हम तो अखबारो मे पढते है कि आप शहद, सन्तरे और बकरी का दूध आदि लेते है।"

गाधीजी ने उत्तर दिया, "यहा आश्रम मे नही। जब दौरे पर होता हू तो लोग प्रेमवश ऐसी चीजे दे देते है। उनको न खाऊ या खराब करू तो उनका मन दुखेगा, पर यहा आश्रम मे तो जबान पर काबू रखना पडता है।"

५५

मैं इसकी शिकायत नहीं करता

गाधीजी शान्तिनिकेतन पहुचे तो उनका भावभीना स्वागत किया गया। दूसरे दिन सवेरे ही वह बड़ो दा अर्थात् श्री द्विजेन्द्रनाथ टैगोर के दर्शन करने के लिए गये। वह बहुत वृद्ध थे, लेकिन जब देखो तब नित्य नवीन लगते थे। फूलो का एक हार लेकर वह एक बड़ी कुर्सी पर बैठे थे। गांधीजी ने झुककर प्रणाम किया

बडो दा का जी इतना भरा हुआ था कि वह जैसे-तैसे इतना ही कह सके, "मेरा जी भरा हुआ है। मुझसे बोला नही जाता।"

गाधीजी ने कहा, "परन्तु मै जानता हू, आप क्या कहना चाहते है ?"

बडो दा बोले, "आपकी विजय के बारे मे मुझे शका नही है। मै जानता हू, आपका वज्र जैसा हृदय किसी बाधा से डिगेगा नही। मै तो इतना कमजोर हू "

गाधीजी बोले, "शरीर से, आत्मा से नही। अरे, शरीर से भी नही।"

बडो दा हँस पडे। कहा, "आज ऐसा लगता है, जैसे मेरा नया जन्म हुआ है।"

गाधीजी बोले, "हा, मैने सुना है, आप बार-बार ऐसा कहते है।"

बडो दा अब 'यग इण्डिया' की बाते करने लगे। बोले, "आपसे लोग चाहे जैसे सवाल पूछते है तो भी आप उनके जवाब देते है। जैसे एक भाई ने पूछा, 'आप सन्यासी जैसे है। आपसे ऐसा काम कैसे होता है ? यह सब अग्रजी शिक्षा का परिणाम है।'

गाधीजी ने उत्तर दिया, "मै तो बेवकूफी से भरे प्रश्नो से भी लाभ उठाता हू। कभी-कभी तो ऐसा होता है कि ऐसे प्रश्न पूछे जाते है, जिन पर मै कभी न लिखता। उन प्रश्नो के कारण मुझे लिखने का मौका मिल जाता है।"

बडो दा बोले, "लेकिन हमेशा जवाब देना तो मुश्किल हो जाता है।"

गांधीजी ने उत्तर दिया, "मैं इसकी शिकायत नही करता। यह काम तो मैने अपने-आप सिर पर ले लिया है।"

. ५६

आपकी योग्यता के संबंध में निर्णय करना मेरा काम है

ऐतिहासिक डांडी-यात्रा के समय जे० सी० कुमारप्पा की लेखमाला 'राजस्व और हमारी गरीबी' प्रकाशित हो रही थी। गांधीजी की बडी इच्छा थी कि उसे पुस्तक के रूप मे प्रकाशित किया जाय। कुमारप्पा चाहते थे कि उसका प्राक्कथन गांधीजी लिखे। इस संबंध मे चर्चा करने के लिए गांधीजी ने उन्हे कराडी मे बुला भेजा। जाते समय कुमारप्पा ने अपने नियम के अनुसार

है कि आप उनकी सहायता करे ।"

कुमारप्पा ने जवाब दिया, "गाधी दर्शनशास्त्र से मैं सर्वथा अनभिज्ञ हू । इसके अतिरिक्त 'यग इडिया' का क्या स्वरूप है, सपादक-पद कैसे सुशोभित किया जाता है, यह भी मै नही जानता। हा, धूलभरी खाता-वही जाचने का काम अलबत्ता इससे कही अच्छी तरह कर सकता हू । इस प्रकार का कोई काम हो तो उसे करने मे मुझे बहुत खुशी होगी । लेखन-कार्य से तो मुझे बरी ही किया जाय ।"

गाधीजी ने उत्तर दिया, "लेखक-विषयक आपकी योग्यता के विषय मे निर्णय करना पत्र-सपादक के नाते मेरा काम है, न कि आपका । इसीलिए मै आपको अपने पत्र मे लिखने के लिए निमन्त्रित करता हू । प्रत्येक लेख के अन्त मे लेखक का नाम प्रकाशित करने की हमारी प्रथा रही है । अब यदि आपका लेख रद्दी हुआ तो पाठक कहेगे कि महात्मा गाधी के पत्र मे कूडा-करकट भरा रहता है । किन्तु यदि आपने प्रशसा के योग्य कोई वस्तु दी तो उसका सारा श्रेय गाधीजी के पत्र मे लिखनेवाले कुमारप्पा को ही मिलेगा ।"

. ५७ .

रात की थकावट भी तो उतरनी चाहिए न !

उन दिनो गाधीजी सयुक्त प्रान्त (वर्तमान उत्तर प्रदेश) की यात्रा पर थे। महादेवभाई तो सदा उनके साथ ही रहते थे। गाधीजी की तरह उन्हे भी चलती गाडी मे लिखने का वहुत अच्छा अभ्यास हो गया था। एक दिन बहुत काम था। रात मे देर तक वह लिखते रहे और उसे पूरा करके ही सो पाये। ऐसी स्थिति मे सवेरे जल्दी उठना उनके लिए सभव नही हो सका। वह काफी देर से उठे और पाया कि गाधीजी पहले से ही वेटिग रूम मे जाकर चाय, डबलरोटी और मक्खन आदि ले आये है।

गाधीजी चाय नही पीते थे। वह उसके कट्टर विरोधी थे, लेकिन वह यह भी जानते थे कि महादेवभाई चाय पीते है, इसीलिए वह नाश्ता लेकर उनके जागने की राह देख रहे थे। महादेवभाई वडे लज्जित हुए। वह पहली वार ही यह जान सके कि गाधीजी को उनके चाय पीने का भेद मालूम हो गया है, लेकिन गाधीजी ने तो मीठी-मीठी बाते करके उनका सारा सकोच दूर कर दिया और कहा, "रात की थकावट भी उतरनी चाहिए न!"

वह एक इंच भी नही हटेगा

एक दिन गांधीजी फीनिक्स से डरवन जा रहे थे। प्रभुदास गाधी भी उनके साथ थे। डरवन पहुचकर वे लोग सीधे वन्दरगाह पर गये। पोलक उसी दिन भारत से लौटनेवाले थे। उनके स्वागत के लिए ही ये वहा गये थे। और भी वहुत-से भारतवासी वहा इकट्ठे हुए थे। स्टीमर को वन्दरगाह मे प्रवेश मिल गया था, परन्तु किनारे लगने मे कुछ देर थी। इसलिए गाधीजी दूसरे नेताओ के साथ एक वड़े गोदाम की छाया मे खड़े वाते कर रहे थे। इसी बीच प्रभुदास उनसे अलग होकर अपने पिताजी के साथ वहा पहुच गये, जहा स्टीमर लगनेवाला था।

धीरे-धीरे स्टीमर आकर किनारे लग गया। डेक पर पोलक दिखाई दिये। प्रभुदास के पिता उनसे वाते करने लगे। उसी समय एक अग्रेज युवक, जो शायद वन्दरगाह का कोई कर्मचारी था, वहा आया और इन लोगो के तथा स्टीमर के वीच मे जो संकरी जगह थी उसमे से होकर दूसरी ओर निकल गया। जाते-जाते उसने वडी उद्दण्डता के साथ प्रभुदास के पिता छगनलाल गाधी से कहा, "चलो, हटो यहा से।"

उसे निकलने के लिए जगह चाहिए, यह समझकर छगनलाल थोडा पीछे हट गये। लेकिन दूसरे ही क्षण वह गोरा युवक फिर वहा आया। वोला, "चलो, ह ट जाओ।"

छगनलाल इस वार टस-से-मस न हुए और वही खडे-खडे

पोलक से बाते करते रहे। अब तो उस युवक का पारा चढ गया। गरजकर वोला, "अबे, सुनता क्यो नही ? इस सीढी के पास से हटने के लिए तुझसे ही कह रहा हू। हट, क्यो नही जाता ? हट इधर से।"

इतना कहकर वह छगनलाल को धक्का देने के लिए आगे बढा। तभी सहसा गाधीजी और दूसरे लोगो का ध्यान उस ओर गया। वह युवक जितनी तेजी से बोला था, उससे दुगने ऊचे स्वर मे गाधीजी ने डाट लगाई, "वह एक इच भी नही हटेगा।"

आकाश गूज उठा। वह युवक चकित होकर गाधीजी की ओर मुडा। क्रोध से वह पागल हो उठा था। पास जाकर बोला, "क्यो नही हटेगा ? उसे हटना ही पड़ेगा। जहाज पर कुछ गड-बड करनी है क्या ?"

गाधीजी का पुण्य-प्रकोप और भी प्रज्वलित हो उठा। तीव्र स्वर मे बोले, "नही-नही, वह एक इच भी नही हटेगा। तुम क्या करना चाहते हो ?"

सघर्ष बढ सकता था। लेकिन कुछ बडे अग्रेज अफसर वहा आ गये। उस युवक को समझाते हुए उन्होने कहा, "यह तो गाधी है। मामूली कुली नही है। इससे तुम क्यो झगड रहे हो ?" यह और इसके साथी ऐसे नही है, जो स्टीमर पर कुछ गडवडी करे।"

वे उस युवक को वहा से ले गये।"

हठपूर्वक उपवास करके यदि आप मर जायंगे...

चादा जिले के हरिजन डिस्ट्रिक्ट वोर्ड मे सीट चाहते थे, लेकिन वह उनको मिल नही रही थी। वे गाधीजी से मिलने आये। गाधीजी का काम करने का अपना ढग था। वह उन्हे न्याय दिलाना तो चाहते थे, लेकिन कार्यकर्ताओ से पूछताछ कर और सब बातो की छानबीन कर लेने के बाद।

हरिजन भाई तत्काल न्याय चाहते थे। गाधीजी को यह बात ठीक नही लगी। तब उन हरिजन भाइयो ने उन्हीके विरुद्ध सत्याग्रह कर दिया और आश्रम के द्वार पर ही उपवास करने लगे। गाधीजी ने उनसे कहा, "आप लोग द्वार पर बैठे है। इससे आपको तकलीफ होती है। अन्दर आश्रम मे बैठे तो कैसा हो! मै आपको मकान देता हू।"

उन्होने उनके लिए उचित व्यवस्था कर दी। सब आश्रम-वासियो को आदेश दिया कि इन उपवास करनेवालो को किसी प्रकार का कष्ट न हो। उनमे स्त्रिया भी थी। वे लोग समझते थे कि स्त्रियो के उपवास से गाधीजी घबरा जायगे और हमको सीट दिला देगे।

लेकिन गाधीजी हिमालय की तरह अटल रहे। उन्होने कहा, "उचित रीति से जितना मै कर सकता था, उतना किया। इस प्रकार हठपूर्वक उपवास करके यदि आप मर जायगे तो भी मै

परवा नही करूगा।"

वह प्रतिदिन सुबह-शाम उनके पास जाते। बडे प्रेम से उनसे बाते करते। उनको किसी चीज की आवश्यकता होती तो आश्रम से सहायता करने के लिए कह देते। उन्होने उनके साथ ऐसा बर्ताव किया, जिससे कोई यह नही कह सकता था कि वे उनके विरोधी है। लेकिन वह झुके नही। आखिर हरिजन भाइयो ने अपनी हार स्वीकार की और उपवास बन्द करके चले गये।

. ६०

तुम्हें उपवास नहीं करना चाहिए

एक बार मजदूरो की हडताल के प्रश्न को लेकर गाधीजी ने उपवास करने का निश्चय किया। उनके इस निश्चय से उनके साथी बहुत व्याकुल हो उठे। महादेव देसाई, अनुसूयाबहन और काकासाहेब कालेलकर ने तो इस बात की घोषणा कर दी कि वे भी गाधीजी का अनुसरण करेंगे।

सबसे पहले महादेवभाई गाधीजी के पास पहुचे। बहुत देर तक दोनो विचार-विमर्श करते रहे। गाधीजी ने महादेवभाई को समझाने की बहुत कोशिश की, लेकिन वह अडिग रहे। तब सहसा गाधीजी कठोर हो उठे। बोले, "महादेव, मै भी जानता हू कि तुम्हारा धर्म क्या है? तुम्हे उपवास नही करना चाहिए। अगर तुम मेरी बात नही मानोगे तो मै तुम्हारा मुह नही देखूगा।"

अब तो महादेवभाई की चिन्ता का कोई पार नही था। दुखी मन वह काकासाहब के पास आये। बोले, "बापू अगर मेरा मुह नही देखेगे तो मै जिन्दा कैसे रहूगा ?"

काकासाहब ने उत्तर दिया, "बापू तो हमारी अन्तरात्मा की तरह है। अगर वह खाने को कहते है तो हमे खाना ही चाहिए। यह हमारी परीक्षा का अवसर है।"

उसी दिन शाम की प्रार्थना के बाद गाधीजी ने कहा, "अगर तुम लोग मेरे साथ उपवास करोगे तो मेरी शक्ति बढने की बजाय घटेगी। दिन-रात मुझे तुम लोगो की चिन्ता सताती रहेगी। तुम्हारा कर्तव्य है कि तुम खा-पीकर मुझे रचनात्मक कार्यो मे सहयोग दो। अगर तुम्हे किसी दिन मिष्टान्न बनाकर खाने का अवकाश हो तो वह भी तुम्हे खाना चाहिए। मेरे साथी भी मेरे साथ अनशन करेगे तो मेरा सब कार्यक्रम रुक जायगा और मै स्वय अनशन न कर सकूगा।"

६१ .

मैंने तो अपना कर्त्तव्य पालन किया है

एक बार गाधीजी रेल से कही जा रहे थे। तबतक वह महात्मा नही बने थे। दक्षिण अफ्रीका मे रग-भेद के विरुद्ध सत्याग्रह चला रहे थे। बीच मे भारत आये थे। उसी समय की बात है।

उनके डिब्बे मे एक ऐसा व्यक्ति बैठा था, जो बार-बार फर्श पर थूक रहा था। गाधीजी ने उससे कुछ नही कहा। कागज के

टुकडे से थूक को पोछकर फर्श को साफ कर दिया। उस व्यक्ति ने यह सब देखा, समझा कि यह सफाई-पसन्द आदमी मुझे नीचा दिखाना चाहता है। वस, उसने फिर थूक दिया। गाधीजी ने पहले की तरह फिर पोछ दिया। अब तो वह व्यक्ति बार-बार थूकने लगा, लेकिन गाधीजी तनिक भी विचलित नही हुए। जैसे ही वह थूकता, वह बिना बोले फर्श को साफ कर देते।

अन्त मे स्टेशन आ गया। उस थूकनेवाले व्यक्ति ने पाया कि प्लेटफार्म पर जनता की अपार भीड है और सारा वातावरण 'गाधीजी की जय' के नारो से गूज रहा है। गाडी रुकते ही सब लोग उसी डिब्बे की ओर दौडे। थूक पोछनेवाले व्यक्ति ने हँसते-हँसते भीड का नमस्कार स्वीकार किया।

यह सब देखकर वह व्यक्ति तो हतप्रभ रह गया। वह बडा शर्मिन्दा हुआ। उसने लपककर गाधीजी के चरण पकड़ लिये। बार-बार क्षमा मागने लगा। गाधीजी ने इतना ही कहा, "क्षमा की कोई बात नही। मैने अपना कर्तव्य-पालन किया है। ऐसा अवसर आने पर तुम भी ऐसा ही करना।"

: ६२ :

चंचल आगे रहेगा और...

बगाल मे घूमते-घूमते गाधीजी चादपुर आये। गाव की पाठशाला भी देखी और लडको से खूब मनोविनोद किया। वोले, "जो सबसे चचल वालक है वह आगे आ जाय।"

पाच बालक सामने आये। गाधीजी बोले, "जो सबसे मूर्ख बालक है, वह आगे आये।"

लगभग सभी लडके खडे हो गये। इसपर गाधीजी ने कहा, "सबसे अधिक दुष्ट कौन है?"

एक लडका खडा हुआ। उससे गाधीजी ने पूछा, "तू बहुत दुष्ट कैसे है?"

वह लडका बोला, 'मै पेड पर चढता हू, दौड लगाता हू।"

गाधीजी ने पूछा, "तू कातता कितना है?"

उस लडके ने उत्तर दिया, "मै तो कातना जानता ही नही।"

गाधीजी बोले, "तो जा, चचलता के लिए तू फेल होता है।"

और वह फिर मूर्ख बालको की ओर मुडे। बोले, "सबसे मूर्ख कौन है?"

एक लडका खडा हुआ। गाधीजी ने पूछा, "तुम मूर्ख कैसे हो।"

लडके ने उत्तर दिया, "बहुत बुद्धि नही और बहुत पढा भी नही।"

"कातते कैसा हो?"

लडका बोला, "कातता तो हू, पर बहुत अच्छा नही कात सकता। एक घटे मे पचास-साठ गज ही कातता हू।"

गाधीजी ने पूछा, "दौडते हो?"

"जी, नही।"

गाधीजी ने पूछा, "कूदते-फादते हो ?"

"जीहा ।"

"सिलाई आती है ?"

"थोडी-थोडी ।"

अब गाधीजी उन सब लडको को सम्बोधित करते हुए बोले, "तुम चचल लडके की मेरी व्याख्या सुनो । खूब खेले, दौडे, नाचे, कूदे वह तो चचल है ही, लेकिन सचमुच चचल वह है जो खूब कातना जानता है और सब कामो मे आगे बढता है। जो खूब अग्रेजी बोलता है, उसे मै चचल नही कहता । लेकिन जो खूब कातता है, उसे मै खूब चचल कहता हू, क्योकि वह समझता है कि उसे कैसे कातना चाहिए । वह समझता है कि उसके कातने से भारत की गरीबी कम होगी। वह अपने सामने घडी रखकर बैठेगा और देखेगा कि कितने समय मे कितना काता है और दूसरो से तुलना करेगा। दूसरे लडके एक घटे मे सात सौ गज कातते है तो वह भगवान से साढे सात सौ गज कातने की शक्ति मागेगा और अन्त मे साढे सात सौ गज कातकर चैन लेगा ।

"अब मै तुम्हे बताता हू कि मूर्ख किसे कहते है। मूर्ख वह है, जिसे सन्तोष ही न हो। साढे सात सौ गज कातने के बाद भी जिसे ऐसा लगे कि अभी और कातना चाहिए। वह कहेगा कि मैं बढता ही रहूगा। ऐसा मूर्ख भी अच्छा और ऐसा चचल भी अच्छा। ऐसे मूर्ख मे नम्रता है, ऐसे चचल मे साहस है। हमे दोनो ही चाहिए। चचल आगे रहेगा और मूर्ख आगे जाने की चेष्टा करेगा। दोनो भारत की सेवा के लिए प्रयत्न करेगे। उनमे स्वार्थ नही होगा। वे सदा ब्रह्मचर्य का पालन करेगे, दया का पालन

करेगे। सहपाठी की सेवा करेंगे। माता-पिता के प्रति भक्ति रखेगे। ऐसो को मै मूर्ख और चचल कहता और मानता हू। चाहता हू, तुम भी ऐसे ही वनो।"

६३

पहला काम पहले

एक बार ग्राम-सुधारको को गाधीजी ने सलाह दी कि वे गाव की सफाई के हेतु मेहतर का काम किया करे।

कार्यकर्ताओ ने उत्तर दिया, "यदि हम मेहतर का काम करने लगेगे तो गाव मे हमारी जो प्रतिष्ठा है या गाववालो पर हमारा जो प्रभाव है उसे हम खो बैठेगे। फिर कोई दूसरा काम करना असम्भव हो जायगा।"

लेकिन गाधीजी ने उनकी एक न सुनी। बोले, "पहला काम पहले। जहा भी कही कूडा-करकट हो वहा से वह तुरन्त हटा देना चाहिए। गन्दगी दूर करने के लिए कभी वक्त नही ढूढा जाता।"

गाधीजी केवल उपदेश देकर ही रह गये हो, यह बात नही, वह स्वय और उनके साथी प्रतिदिन सवेरे जब सैर करने के लिए निकलते तो एक बालटी और फावडा साथ लेकर चलते थे। सडक के किनारे जहा कही भी उन्हे कूडा या मल दिखाई देता, खाद वनाने के लिए उसे आश्रम मे ले आया करते थे।

गीता का पाठ केवल पढ़ने के लिए नहीं होना चाहिए

बिहार-प्रवास में एक दिन सूचना मिली कि किसीने बारी-साहब का खून कर दिया। अब्दुल बारीसाहब गाधीजी के परम भक्त थे। उन्होने देश के लिए फकीरी का जीवन बिताया था। बरसों से वह बिहार प्रान्तीय काग्रेस समिति के अध्यक्ष थे।

इस अकल्पित समाचार से सब एकदम काप उठे। बाद मे पता लगा कि इस हत्या की तह मे कोई राजनैतिक कारण नही था। बारीसाहब मोटर मे बैठकर पटना आ रहे थे। उन दिनो चुगी की बहुत चोरी होती थी। उसे रोकने के लिए सरकार ने गोरखा पुलिस तैनात की थी। उसके और बारीसाहब के बीच मोटर खडी न करने के कारण झगडा हो गया और इस झगड़े में सिपाही ने बारीसाहब को गोलियो से छेद दिया।

गाधीजी बोले, "वह बडे भले थे, लेकिन उतने ही जिद्दी भी थे। अगर यह वृत्तान्त सही हो तो कहना पडेगा कि पहरे पर खडे पुलिस को शका होने पर बारीसाहब को मोटर रोकनी ही चाहिए थी। वह फकीर आदमी थे। बाल-बच्चो के लिए तावे का एक पैसा भी उन्होने नही कमाया। प्रेमपूर्वक काग्रेस की अद्भुत और मूक सेवा की। काग्रेस को उनके परिवार के निर्वाह के लिए जरूर विचार करना चाहिए।"

अगले दिन सब लोग बारीसाहब के घर गये। वहां करुण

क्रन्दन मचा हुआ था। उनकी लडकिया जोर-जोर से पुकार रही थी, "बापूजी, हमारे अब्बाजान कहा चले गये ?" उनका रोना देखकर मनु भी रो पडी। लौटते समय गाधीजी ने उससे कहा, "तुममे अभी तक हिम्मत नही है। गीता का पाठ केवल पढने के लिए नही होना चाहिए। मृत्यु तो एक ही सिक्के का दूसरा पहलू है। मै तुम्हे इसलिए बेगमसाहिबा और लडकियो के पास ले गया था कि वे सब तुम्हे कुटुम्ब की लडकी जैसी मानते है। लडकिया तुम्हारी मित्र है, इसलिए तुम उन्हे आश्वासन दे सकोगी। परन्तु इसकी बजाय मुझे उन लडकियो के साथ तुम्हे भी समझाना पडा। गीता के पाठ की ऐसे ही समय सच्ची परीक्षा होती है।"

: ६५ :

खून का दबाव बढ़े तो घूमने जायं

जे० सी० कुमारप्पा जब रक्तचाप से पीडित थे, तो डाक्टरो से अपनी परीक्षा कराने के लिए बम्बई गये। उन्होने अच्छी तरह परीक्षा करने के बाद कहा, "शारीरिक प्रक्रिया मे कोई गडबडी नही है। रक्तचाप की शिकायत का कारण कमजोरी ही हो सकती है।"

कुमारप्पा यह रिपोर्ट लेकर गाधीजी के पास पहुचे। गाधीजी बोले, "हमे इस कमजोरी का कारण खोजना ही होगा, अन्यथा न तो हम इसका उचित इलाज कर सकेगे और न इसे जड से ही

दूर कर पायेंगे।"

बस उन्होंने कुमारप्पा की शारीरिक और मानसिक हलचलों द्वारा इसका पता लगाने का निश्चय किया। उस समय लाहौर के किसी कालेज की एक अध्यापिका कुछ समस्याओं पर विचार करने के लिए आई हुई थी। गाधीजी ने उन्हे कुमारप्पा के पास भेज दिया और डा० सुशीला नैयर से कहा कि वह चर्चा के पहले और बाद उनके रक्तचाप की जाच करे।

पन्द्रह मिनट चर्चा करने के बाद देखा गया कि कुमारप्पा का रक्तचाप पन्द्रह डिग्री बढ गया था।

दूसरे दिन गाधीजी ने उद्योगशाला के प्रबन्धक को बुलाया। उनसे लकडी के एक तख्ते पर एक लकीर खिचवाई और बोले, "कुमारप्पा से कहो कि वे ठीक इसी लकीर पर आरी चलाये। साथ ही आरी चलाने से पहले और उसके बाद उनके रक्तचाप की जाच की जाय।"

उस दिन रक्तचाप २० डिग्री बढ गया। तीसरे दिन गांधीजी ने व्यायाम-शिक्षक को बुलवाया और कुमारप्पा से उनके साथ एक फर्लांग दौडने के लिए कहा। पहले की तरह रक्तचाप की परीक्षा की गई। इस बार पता लगा कि रक्तचाप पन्द्रह डिग्री नीचे उतर गया।

बस गाधीजी ने निश्चय किया कि लगातार मानसिक परिश्रम करने के कारण ही कुमारप्पा को रक्तचाप की शिकायत हो गई है। शारीरिक क्षीणता का उससे कोई सबध नही। बोले, अब कभी भी खून का दबाव बढे तो आप घूमने के लिए चले जाय। मस्तिष्क पर अधिक जोर नही पडना चाहिए। इसलिए

निरन्तर बडी देर तक काम करने की ग्रादत ग्राप छोड दे। बीच मे थोडा ग्राराम कर लिया करे। ग्यारह या बारह वजे तक काम करे। उसके बाद दो घटा ग्राराम करे। इसीके ग्रनुसार भोजन का समय भी बदल ले। जिससे पाचन क्रिया ग्रौर मस्तिष्क का कार्य एक ही साथ शुरू न हो। इस प्रकार ग्राप रक्तचाप की ग्रपनी शिकायत पर वहुत कुछ काबू पा सकते है।"

. ६६

कला कल्याणकारी हो तभी मुझे स्वीकार्य है

एक सध्या को सुप्रसिद्ध सगीतज्ञ दिलीपकुमार राय गाधीजी के सबध मे मॉ० रौला का एक पत्र लेकर ग्राये। दिलीपकुमार ग्रावे ग्रौर गाधीजी उनसे सगीत न सुने, यह ग्रसम्भव जैसा ही था। ग्रादेश होते ही दिलीपकुमार राय ने ग्रपने सुमधुर स्वर मे गाया, "जानकीनाथ सहाय करे। "

प० मोतीलाल नेहरू तो जैसे मुग्ध हो उठे ग्रौर उन्होने तुरन्त दूसरे भजन की माग की। दिलीपकुमार ने दूसरा भजन गाया, "जब प्राण तन से निकले।"

इसके बाद मॉ० रौला का पत्र पढा गया। उसमे गाधीजी के कला-सबधी विचारो की चर्चा थी। दिलीपवाबू ने कहा, "मै यह नही समझ पाता कि ग्राप सृष्टि-सौदर्य पर क्यो जोर देते है। क्या चित्रकार की कूची ग्रौर शिल्पकार की मूर्ति मे वह सौदर्य

नही है ?"

गाधीजी ने उत्तर दिया, "मेरा काम इन सुन्दर चित्रो के बिना चल सकता है। इसीलिए मैंने कहा कि मेरी दीवार चित्र-रहित हो तो मुझे अच्छा लगता है। चित्रो द्वारा मुझे प्रभु की लीला निहारने की आवश्यकता नही। ईश्वर ने ऐसी भूमि और आबहवा मे हमे रखा है कि सुन्दर सूर्योदय, चन्द्रिका, तारे, जल और थल, इन सबके दृश्य प्रत्यक्ष देखने को मिलते है। जहा बहुत दिनो तक सूरज नही दिखाई देता, उस लन्दन में ऐसे चित्रो की जरूरत पड सकती है। मेरा ध्येय सदा कल्याण का है। कला कल्याणकारी हो तभी वह मुझे स्वीकार्य है। मै यूरोप की दृष्टि से कला को नही देखता। भारतीय कलाकारो ने अपनी कला मन्दिरो और गुफाओ मे चित्रित कर उसे सार्वजनिक कर दिया है। गरीबो को ऐसे स्थानो पर जाकर जो चाहिए, मिल जाता है।"

दिलीपबाबू बोले, "लेकिन सगीत के विषय में आप क्या कहते है ? सगीत तो आप गरीब के लिए भी चाहेगे।"

गाधीजी ने उत्तर दिया, "हा, सगीत सारी कलाओ में सर्वोपरि है। इसका अनेक प्रकार से हमारे जीवन के साथ सबध है। वह नाना रूपो मे कल्याण-साधक है, गरीब-से-गरीब के लिए वह सुलभ है।"

दिलीपबाबू ने यूरोप के सगीत की चर्चा आरम्भ की। गाधीजी को भी उसका अनुभव था। देर तक चर्चा करने के बाद गाधीजी ने कला के सबध मे अपना मन्तव्य प्रकट करते हुए कहा, "कलाकार जब कला को कल्याणकारी बनाता है और जनता के लिए सुलभ कर देता है तभी उस कला को जीवन में स्थान

मिलता है। मैं मानता हू जब कला सवकी न रहकर थोडो की हो जाती है तब उसका महत्व कम हो जाता है।"

दिलीपकुमार ने कहा, "तव तो इस दृष्टि से जो दर्शन लोगो की बुद्धि के लिए सहज गम्य न हो, जो काव्य या साहित्य साधारण लोगो के लिए सुवोध न हो, वह आपको पसन्द नही होगा।"

गाधीजी दृढ स्वर मे बोले, "हरगिज नही होगा। बुद्धि का प्रत्येक व्यापार, जिसमे गरीवो को अलग करने की बात हो, उसकी कीमत जो सब लोगो के लिए है, उससे कम ही है। वही काव्य और साहित्य चिरजीवी रहेगा जो लोगो का होगा जिसे लोग आसानी से प्राप्त कर सकते है और सहज ही अपना सकते है।"

: ६७ ·

मेरा धर्म अहिंसा है

यात्रा करते हुए गाधीजी मागरोल पहुचे। रात को सार्वजनिक सभा हुई। दूर पर कुछ अछूत बालिकाए वैठी हुई थी। उन्हे भी गाधीजी का स्वागत करना था। वे उठती, इससे पहले ही गाधीजी वोल उठे, "मनुष्य के धीरज का कही तो अन्त होता है। यदि अछूत वालाओ को वही से वोलना होगा तो मै चुप नही रह सकता। तव तो काग्रेस कमेटी की ओर से मुझे जो मानपत्र मिला वह आडम्बर हो जायगा। मै तो कह चुका हू मै अत्यज हू, भगी

हू। ऐसे विशेषण देकर अपनी आत्मा को मै प्रसन्न करता हू। तब जिन्हे मै अपना मानू, उन्हे आप दूर रखे और मुझे पास रखना चाहे, यह कैसे हो सकता है ? आपने जो मेरी प्रशंसा की है, वह सच्ची हो तो हम जहा बैठे है, वही इन बच्चियो को बैठने के लिए कहना चाहिए। आपके स्वागत-द्वारो पर मैने अस्पृश्यता-निवारण के सूत्र देखे हैं। यह या तो केवल आडम्बर है या आपकी असमर्थता को प्रकट करता है। मै कहता हू या तो आपने मुझे जो मानपत्र दिया है, वह वापस ले लीजिये या अछूतो के बीच मे जाकर बैठने दीजिये। आप सच्चे दिल से चाहते हो कि अत्यज भाई-बहन हमारे बीच मे बैठे तो ऐसा कहिए। मेरा धर्म अहिंसा है। मै आपको दुख पहुचाना नही चाहता। मेरे कारण आप अत्यजो को आने देगे तो मेरी अहिंसा का लोप हो जायगा। परन्तु यदि आप समझते है कि मैंने धर्म-रक्षा की जो बात कही है, वह सही है तो अछूतो को आने दीजिये। आप उन्हे आने देने के विरुद्ध हाथ उठायगे तो भी मुझे दुख नही होगा। आप निडर होकर राय दे।"

अत्यजो से जाकर बैठिए।"

लेकिन सभा ने तो अछूतों को अपने बीच मे बैठाने के पक्ष मे राय दी थी। गाधीजी धर्मसकट मे पड गये। उन्होने सभा से प्रार्थना की, "इस समय हम आपकी राय के अनुसार काम नही कर सकते। मुझे वहां जाकर बैठने दे तो अच्छा है।"

यह कहकर गाधीजी अत्यजो की ओर चले कि तभी एक और सज्जन उठे। गम्भीर स्वर मे उन्होने उस विरोधी ब्राह्मण से कहा, "देखिए, गाधीजी जायगे तो उनके पीछे हम भी जायगे। आप तो अलग-के-अलग ही रहेगे। इसलिए आप ही हट जाय तो क्या बुरा है?"

वह ब्राह्मण समझ गये। वह उठे। उनके साथ दो-तीन व्यक्ति और उठे। शेष व्यक्ति जिन्होंने अछूतो के विरुद्ध हाथ उठाये थे, वे यह कहकर 'घर जाकर नहा लेगे' वही बैठे रहे। रात के लगभग ग्यारह बज रहे थे। उस समय वे अछूत कन्याए सवर्णो के बीच आकर यह गरबा गाने लगी .

ऐसे गाधी गुजरात मे जन्मे रे
ये तो लगते पोचे-पोचे बनिये रे,
पर करते ये शूरवीर का काम. .ऐसे

संदर्भ

इस पुस्तक के प्रसग जिन पुस्तको से सम्पादित रूप मे लिये गए हैं, उनके नाम, प्रसगो की सख्या तथा लेखको के नाम साभार दिये जा रहे है :

अकालपुरुष गाधी (जैनेन्द्रकुमार) १४

एकला चलो रे (मनुबहन गाधी) ४९

कुछ देखा, कुछ सुना (घनश्यामदास बिडला) २४

गाधी . व्यक्तित्व, विचार और प्रभाव (सकलन) श्रीप्रकाश १७, २२

" " " (सकलन) वियोगी हरि २९

" " " (सकलन) महावीर त्यागी ३७

" " " (सकलन) जगजीवनराम ४६

" " " (सकलन) रामनाथ सुमन १

गाधीजी की साधना (रावजीभाई पटेल) ६

गाधीजी के जीवन-प्रसग (सकलन) एस० के० जार्ज ३

" " (सकलन) राजकुमारी अमृतकौर १२

" " (सकलन) जे० सी० कुमारप्पा ५६, ६५

" " (सकलन) भारतन कुमारप्पा ६३

गाधीजी के चरणो मे (व्रजकृष्ण चादीवाला) १८

गाधीजी के सपर्क मे (सम्पा० चन्द्रशकर शुक्ल) २, ७, १६, २३, २६, ३१, ३४, ३८, ३९, ४१, ४४, ५७, ६०

गाधी शताब्दी पारिजात स्मारिका (महेशप्रसाद सिंह) ६८

जीवन प्रभात (प्रभुदास गाधी) ९, ३५, ४०, ४३, ४७, ५०, ५८

दीदी, मार्च १९४८ (श्रीनाथ सिंह) ८, ५४

बच्चो के बापू ६१

बापू की छाया मे (बलवतसिंह) ३२, ३६, ५९

बापू की झाकिया (काका कालेलकर) २१

बापू रो पडे (महावीर त्यागी) २८

बिहार की कौमी आग मे (मनुबहन गाधी) ४, १०, २०, ५२, ५३, ६४

महादेव भाई की डायरी, प्रथम खड (महादेव देसाई) ४, ११, १५, १९

" " तीसरा खड (महादेव देसाई) २५, ३०, ३३

" " चौथा खड (महादेव देसाई) ६६

" " पाचवा खड (महादेव देसाई) ४२, ४५, ४८, ५१, ५५, ६२, ६७

मेरे हृदयदेव (हरिभाऊ उपाध्याय) २७

राष्ट्रपिता महात्मा गाधी (ना० रा० अभ्यकर) १३